प्रकाशक—
वीरपुत्र श्री आनन्दसागर ज्ञान भण्डार
कोटा—राजपूताना।



मुद्रक—
राजमल लोढा
भारत प्रिंटिंग प्रेस,
धान मंडी, मन्दसौर

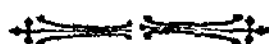
❀ ग्रन्थकर्त्ता गुरुदेव ❀



पूज्यपाद ग्रन्थरचयिता वीरपुत्र-
श्री आनन्द सागरजी महाराज



समर्पण



परम पूज्य सकलागमरहस्यवेदी, प्रकाण्डविद्वान चरित्र-चूडामणि, जैनगगनमार्तण्ड, मुनिसम्राट् परमाराध्य स्वर्गस्थ गुरुदेव श्रीमत् सुखसागरजी महाराज साहब !

आप पतित पावन के समुदाय में निवास कर रत्न-त्रय की आराधना के साथ नानाविध विद्याभ्यास किया और विविध प्रकार से शासन की सेवा की; यह सब आप पूज्यवर का ही प्रताप है। आपके अनेकानेक गुणों की स्मृति में यह "सप्त व्यसन परिहार" नामक लघु ग्रन्थ आप श्री की पवित्र सेवा में सादर सविनय समर्पण करता हूं।

❀ शिवम् ❀

भवदीय चरण किंकर—

वीरपुत्र ✲

॥ ॐ ॥

॥ प्राक्कथन ॥



संसार सरनी पर जन्म लेने वाले प्राणियों को अनेक कष्ट उठाना पड़ते हैं, और खास कर बुरी संगत का ही यह परिणाम होता है—दुष्ट संगति से आदमी दुर्व्यसनी होकर धन धर्म से हाथ धो बैठता है।

खासकर जिस समय जिन व्यसनों का जोर हो, उस समय उनका इञ्जेक्शन लगाना या ऑपरेशन करना (पिचकारी लगाना या नश्तरादि लगाना) विशेष लाभप्रद होता है, यह सोचकर **"सप्त व्यसन परिहार"** नाम के इस लघु ग्रंथ का हमने निर्माण किया है।

इसमें जुआँ खेलना—मांसभक्षण—मदिरापान—वेश्या गमन—शिकार खेलना चोरी करना और परस्त्री गमन करना इन सातों व्यसनों का स्पष्ट विवरण किया गया है अनेक प्राचीन और अर्वाचीन प्रमाणों से इनकी बुराइयाँ सिद्ध कर दी गई हैं और यह साबित कर दिया गया है कि शिष्ट मनुष्य को इनसे सदा दूर रहना चाहिये, और इनके जाल में जो फँस रहे हों उन्हें बल पूर्वक शीघ्र ही मुक्त हो कर अपना श्रेय साधना चाहिए।

यद्यपि हमारी बनाई हुई 'सप्त व्यसन निषेध' नाम की पुस्तक पाँच आवृतियों में प्रकाशित हो चुकी है और यह उसका ही एक प्रतीक है, तदपि यह नूतन रंग ढंग से अनेक विशिष्ट प्रमाणों को लेकर और कुछ मजी हुई हिन्दी से भूषित होकर स्वतन्त्र रूपक के साथ प्रकाशित हो रहा है, इस ही से यह पृथक् नाम से विख्यात होता है-यह किसी देश जाति या धर्म से सम्बन्ध नहीं रखता है, इसलिए इसका लोक प्रिय होजाना स्वाभाविक ही है।

इस लोकोपयोगी ग्रन्थ को छपाने में बीकानेर निवासी रावतमलजी पुनरासर वाले ने तथा अगवरी मारवाड़ निवासी तिलोकचन्दजी सेराजी ने द्रव्य साहायता दी है, अत उनको साधुवाद घटना है जन समुदाय इससे लाभ उठाकर अपना मानव भव कृतार्थ करे।

शुभम

लेखक





विषयानुक्रम

❁ शिवम् ❁



सप्त व्यसन परिहार

उत्थान



सार में अधिकांश लोग व्यसनों में व्यस्त रहते हैं, यह प्रकार अनादि सिद्ध प्रतीत होता है, तथापि सत्पुरुष उनको बचाने का सतत् प्रयत्न करते रहते हैं, इस ही नियम के अनुसार इससे भी प्रस्तुत व्यसनों के परिहार पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जाता है।

यहाँ व्यसन शब्द से दुर्व्यसन (दुष्ट व्यापार) का विधान समझना चाहिए और ये सात इन्द्रियजन्यों के

सहवास म ही प्राप्त होते हैं, उनसे दूर रहने के लिए ही समझाईश की जायगी।

आदि में उनके नाम यहाँ लिखादिये जाते हैं —

द्यूतञ्च मासञ्च सुरा च वेश्या
पापर्द्धि चोरी परदारसेवा ॥
एतानि सप्तव्यसनानि लोके।
घोरातिघोर नरक ददन्ते ॥ १ ॥

भावार्थ—जुआँ-मास-मदिरा-वेश्या-शिकार चोरी और परस्त्री, ये सात व्यसन जगत में अतिशय घोर नरक को देने वाले हैं।

यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि प्रथम नम्बर जुआँ का दिखाई देता है, वह स कारण है अथवा श्लोक के रचियता ने अपनी इच्छानुसार सहज ही लिख दिया है? उत्तर में यह कहा जा सकता है कि इसम एक महत्कारण है और वह यह है कि जुआँ से सातों व्यसन उत्पन्न होते हैं यानी इस एक में सब समा जाते हैं, इसको प्रमाणित करने वाला एक दृष्टान्त यहाँ दिखलाया जाता है—

अर्थात् यदि बच्चे को पिता दुःख दे तब वह माता के शरण में जाता है और यदि माता दुःख दे तो पिता के शरण में जाता है यदि दोनों दुःख दें तो महज्जनों का शरण ग्रहण करता है और यदि महज्जन भी दुःख दें तो राजा के सन्मुख जाता है, परन्तु यदि राजा भी अन्याय करता है तब किसके आगे पुकार करे ? यानी किसका शरण ले ?

अहा ! ऐसे संकट के समय मरुधर में कल्पतरु समान एक जैनाचार्य का उद्यान में पदार्पण होगया, प्रजा को मालूम होते ही वह दर्शनार्थ पहुँची, धर्म देशना के पश्चात् सबने अपनी कष्ट कथा आचार्य देव को सुनाई और रक्षा करने की प्रार्थना की—गुरु महाराज ने समवेदना प्रकट करते हुए यह प्रतिज्ञा की कि जनता का जब तक दुःख शमन न होगा तब तक मैं अन्न—जल ग्रहण न करूँगा, धन्य हो ! परोपकारक शिरोमणि को धन्य हो !

स्याद्वाद दृष्टि को सामने रखकर सापेक्ष बुद्धि की प्रेरणा से उन महात्मा ने एक योजना योजित की—वे मुनीश्वर मछली पकडने का जाल शिर पर रखकर स्मसान में जा खडे रहे, बोलना-चलना-बैठना-उठना,

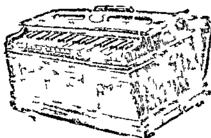
खाना, पीनादि सब त्याग कर ध्यानस्थ रहे, यह हकीकत बिजली के वेग की तरह शहर में फैल गई, प्रजाजन नदी की पूर की तरह उमड़ने लगे, राजा को ज्ञात होने पर वह भी अपने दल के साथ वहाँ पहुंचा, हजारों की मेदनी से श्मशान भूमि एक नगर के रूप में दिखाई देने लगी।

सिर पर जाल देख कर राजा को भारी आश्चर्य हुवा, ऐसे त्यागी महात्मा की यह स्थिति जान कर इच्छा को न रोक सका और आखिर पूछ ही लिया राजा के प्रश्न और यतीश्वर के उत्तर एक कविता में बताये जाते हैं.—

स्वामिन् ! यह कथा ? नहीं मछली मारवे को जाल है।
खेले हूं शिकार आप ? मास चाह भायते ॥
मास हू भखे हैं आप ? जब सुरा की खुमारी होय।
सुरा हू पिये हैं आप ? वेश्या संग जायते ॥ १ ॥
वेश्या हू प्रसंग करे ? पर स्त्री जब मिले नाथ।
पर स्त्री हू गमन करे ? दाम चोर लाए थे ॥
चोरी हू करे हैं आप ? जब जूओं मे हार होय।
एते व्यसन सात—एक जूओं में समाय हैं ॥ २ ॥

अपने प्रश्नों के इस तरह अकाट्य उत्तर सुन कर राजा स्तब्ध हो गया और मौन मुखसे मुनीश के सन्मुख खड़ा रहा, साम्य समय की उपस्थिति देख कर सूरीश्वर ने बोधजनक उपदेश दिया और यह सिद्ध कर बता दिया कि एक जूओं से सातों व्यसन उत्पन्न होते हैं—राजा ने उपदेश सुन कर सातों व्यसन का त्याग किया, इस तरह आचार्य देव ने राजा के कष्टों को निवारण किया।

अब क्रमश एक एक व्यसन का पृथक् पृथक् विवेचन किया जाता है।



* पहिला व्यसन जूआँ *

किसी चीज पर शर्त लगाकर हार-जीत का खेल खेलना "जूआँ" (G mbling) कहा जाता है—फीचर, पानी का चूआ, चोकलका, तास के पत्ते, ब्रिज, पाटला और घोड़ों की रेस आदि पैसे लगाना या खाना सब जूआँ में शुमार है। लाटरी, सोना, चान्दी, रुई, अलसी आदि का सट्टा, लोग भाग्य परीक्षा और व्यापार में गिनते है, पर किसी अश में यह भी जूआँ कहा जा सकता है।

जूआँ के इश्क में इनशान इतना गुल्तान बन जाता है कि ज्यों ज्यों हारता है त्यों त्यों दूना खेलता है, पैसे पूरे हो जाने के बाद मकान गिरो रख देता है, स्त्री के जेवर और नदिया सब बेच देता है, यहाँ तक कि खाने पीने के बरतन और अन्य चीजों का भी फरोक्त कर देता है और रही सही इज्जत में भी आग लगा देता है. आखिर जेलखाने के दर्शन कर मानव जीवन को धूल में मिला देता है।

पुराने जमाने में पाण्डव और नल राजा यहा तक जूआँ खेले कि अपनी स्त्री द्रौपदी और दमयन्ती

गये-वर्तमान काल में भी नये-नये प्रकार के सट्टे प्रच लित हो गये हैं, बेकारों को मानो एक जूआ ही मात्र धन्धा रह गया है। गरीब-अमीर, राजा-रंक, पंडित-मूर्खादि सब ही इस तरफ झुके हुए हैं, इसमें प्रायः निन्यानवे फी सदी हारते हैं और एक जीतता है, यानी निन्यानवे डूबते हैं और एक तिरता है, यह प्रत्यक्ष और चश्मदीद है; कई राजा महाराजा और लखपति-क्रोडपति इसमे गारत हो गये, यह बात भी अब छिपी नहीं है। इससे कितने नुक्सान होते हैं, उन्हें जरा सुनिये—

द्यूतेनार्थयशः कुलक्रमकला सौन्द्य तेज सुहृत्।
साधूपासन धर्म चिन्तन गुणा नश्यन्ति साधोरपि॥
यद्वत्पाण्डु सुतेषु तच्च्युतसुधिय्वा दिव्यभावार्जिते।
विश्वे किं तमसा स्फुट घटपट स्तम्भादि वा लभ्यते॥१

भावार्थ—जूआ से धन, यश, कुल मर्यादा, चतुराई सुन्दरता, प्रेम, साधु सेवा, और धर्म विचार, ये सब गुण सज्जन व्यक्ति के भी नाश हो जाते हैं, जिस तरह बुद्धि भ्रष्ट पाण्डवों की दशा हुई, सच है। सूर्य के होने पर भी संसार में स्पष्ट रहे हुए घट वस्त्र स्तम्भादि क्या अंधेरे में

दिखाई देते हैं ? अर्थात् नहीं दिखाई देते । और भी सुनिये—

माया करोति विकरोति सदैव सत्यं ।
क्रोध दधाति विदधाति बहुननर्थान् ॥
चौर्ये मतिं तनुते तनुते च दोषान् ।
द्यूते रतो भवति चेन्मनुजः पृथिव्याम् ॥२॥

भावार्थ—मेदिनी पर यदि मनुष्य जूआ में आसक्त हो जाय तो वह प्रपंच करता है, निरन्तर सत्य को विकृत बना देता है यानी मिथ्यावादी बन जाता है, क्रोध को धारण करता है, बहुत अनर्थों को सेवन करता है, एवं चोरी में बुद्धि फैलाता है, और दोषों को विस्तृत करता है ।

जूआ वाला विश्वास पात्र नहीं बन सकता, उस पर हरएक का हर तरह का वहम रहता है, विश्वास उठ जाने पर जीवन मूल्यहीन हो जाता है इस व्यसन सेवी को सदा आर्त ध्यान (संकल्प-विकल्प) बना रहता है, कभी कभी रौद्र ध्यान (क्लिष्ट परिणाम) भी आ जाता

है, जिससे तिर्यंच और नरक का अतिथि बनना पड़ता है।

प्राय यह व्यसन दिवाले की दरख्वास्त भी दिला देता है और इज्जत आबरू को धूल में मिला देता है, इससे आदमी तंग होकर आत्म हत्या (Sucide) करने तक पहुंच जाता है।

इस व्यसन से नैतिक जीवन का भारी पतन होकर समाज तथा राष्ट्र के योग्य नहीं रह सकता और धर्म-कर्म से हाथ धो बैठता है, इतना ही नहीं, बल्कि सन्तान पर भी इसका बुरा असर पड़ता है, इससे सारी परम्परा अस्तोव्यस्त बन जाती है–

इससे प्रजा कंगाल बनकर दु:खी हो जायगी और खाने कमाने काबिल न रहेगी, यह सोच कर गवर्नमेंट राज्य में और देशी रियासतों में इसका निरोध करने के लिये कड़ा कानून बनाया, पर पालन में शिथिलता ० नजर आती है, हड़ेचौक जूआँ खेला जाता है पुलिस और कर्मचारी नजरों से देखते हैं, पर इसको रोकने का सबल प्रयत्न नहीं करते कभी कभी लोग दिखाव

के लिये दौड़-धूप और पकड़ा पकड़ी करते हैं, सम्भव है रिश्वत उनको निमत्त बना देती है और इसी से वे कर्तव्यच्युत बन जाते हैं, गवर्नमेंट प्रशासन के संरक्षकों को और राजा महाराजाओं को भी शायद पता होगा, परन्तु मालूम नहीं होता कि वे अपनी जिम्मेवारी को भूल कर इस कदर उपेक्षा क्यों कर रहे हैं? इसकी रोक के लिये कड़े से कड़ा नियन्त्रण कर प्रजा की रक्षा करना चाहिये।

गत पाँच वर्ष की इस विषय का एक घटना मेरे स्मृतिपथ में उपस्थित हो जाती है उसका मैं यहाँ उल्लेख करता हूं- मालवा देशान्तर गत सैलाना रियासत (हमारी जन्मभूमि) में फीचर के सट्टे का काम शुरू हुआ, वहां की प्रजा तकलीफियत को भोगने लगी, यह बात मेरे कानों तक पहुंची, उपकार बुद्धि के वश होकर पूर्व परिचित और बालमित्र समान वहाँ के वर्तमान नरेश श्रीमान दलीपसिंहजी बहादुर के सी आई ई. को उस की रोक के लिए लिखा गया, उसका सन्तोषकारक उत्तर मिला,इन दोनों पत्रों को यहां उद्धृत किये जाते हैं—

(हमारा पत्र)

ॐ नमः मु० उज्जैन-मालव
११-६-१६

नृपेन्द्र महोदय !
श्रीमान् दिलीपसिंहजी साहिब के सी आई ई
सैलाना राज्य

धर्मलाभ पुरस्सर निवेदन है कि यह पत्र एक आव श्यकीय प्रसंगवश लिखा जा रहा है—

हमने ऐसा श्रवण किया है कि थोड़े समय से फीचर का सट्टा शुरु हो गया है जिससे वहां की गरीब प्रजा प्रलोभन के कारण हतप्रहत हो रही है, इस पर आपका ध्यान आकृष्ट होना चाहिये।

' सट्टा और वेश्या का प्रचार न हो ' इसका बड़े दरबार ने पूरा ख्याल रक्खा था, यह हमें बराबर याद है—आप श्री ने भी सट्टे वाले पर 'अमुक दण्ड कायम किया है' ऐसा सुना गया है, मगर उसकी रोक में प्रबल प्रयत्न नहीं होने से काम सफल नहीं हो सका है, अत

इस ओर पूरी निगाह कर आपकी प्रजा को दरिद्रता से बचा लेने की अत्यन्त आवश्यकता है।

आप एक सुज्ञ नरेश हैं और भावि में आपसे बहुत कुछ आशा है, इस खयाल ने निवेदन करने के लिये हमें प्रेरित किया है—विश्वास है कि आप सन्तोषप्रद शीघ्र ही उत्तर देंगे।

शुभम् आपका हितैषी—
VEERPUTRA ANAND SAGAR
C/o Shantinath gali Sarafa Bazar
Ujjain (Malwa)

(दरबार का उत्तर)

Sailana State
Jaswant Nivas Palace
ता० १० दिसम्बर १९३६

स्वामीजी महाराज श्री आनन्दसागरजी,

आपका पत्र मिला। सैलाने में फीचर का सट्टा करने के लिये कानूनी मनादी है, परन्तु यहाँ कुछ लोग छिप कर इस निन्दनीय काम में अपना धन बरबाद करते

थे। पुलिस ने इसकी कड़ी जांच की है, कुछ लोगों इस जुर्म के लिये मुकदमा चल रहा है, जहाँ तक बना है शासन इसके अन्त करने के लिये पूर्ण प्र कर रहा है।

दिलीपसिंह

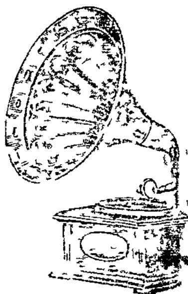
इससे मुझे सन्तोष हुआ, समस्त भारत के नरेन्द्र इनका अनुकरण कर, यह मेरा अनुरोध है।

जिन जिन समझदार बेपारियों ने अपनी दुकानों में सट्टे का काम नहीं होने दिया है, उनकी दुकाने प्राय बरकरार नजर आती हैं, और जिनके सट्टे का सौदा होता है वे दिन व दिन बैठते जाते हैं, यह सब नजरों के सामने है।

जुआँ का धंधा सभ्यता, शिष्टाचार और समझदारी के खिलाफ है, इतना ही नहीं मानव धर्म के लिए एक काला कलङ्क है।

ऊपर के बयान से अब आप ठीक तौर पर समझ गये होंगे कि सकल व्यसनों का जनक जूआँ कितना बुरा है, यदि आप करते हैं तो आज ही त्याग की

प्रतिज्ञा कीजिये, यदि इरादा रखते हैं तो इस दुर्भाव को हृदय से समूल नष्ट कर दीजिए और यदि नहीं करते हो तो ईश्वर का शुक्रियादा कीजिए और सदा मस्त रह कर अपने जीवन की रक्षा कीजिये।



❋ दूसरा व्यसन मांस ❋

मांस (Flesh) शब्द से यहाँ मास भक्षण का मतलब है। स्वय मर हुवे या निज से वा अन्य द्वारा मारे हुवे प्राणियों के कलेवर के मास को खाना 'मास भक्षण' कहा जाता है।

मासाहारी की दलीलें हम पहले शान्तता से श्रवण करलें और पीछे अपने विचार प्रकट करें, यह मार्ग सरल साध्य और ऐच्छनीय होगा।

मास भक्षकों का यह कथन है कि मासाहार से शरीर पुष्ट होता है, मजबूत बनता है और शूरातन जाग्रत होता है; इससे हर एक काम में विजय प्राप्त होती है उनका यह भी कहना है कि मासाहार से दिल और दिमाग तन्ता है, यानी मनोबल और बुद्धि बढती है; इस से सर्व इच्छित कार्य सफल होजाते हैं।

मांस खाने वालों ने थोडी सी पंक्तियों में अपनी सारी मान्यता रखदी है, अब इस पर विचार किया जाता है–

ोटे-बड़े रोगों की सजा दी
ाधी को नासूरादि भयङ्कर रोगों
ाता है।

ीवधम्स का यह कथन है कि—
सदी मनुष्य गले की आंतों के रोग
भसे दान्तों का रोग होकर दान्त सड़ने
ायोरिया (दान्तों में पीप का रोग) हो

ः कार्टन का यह वक्तव्य यथार्थ है कि
डिस्पेप्सियाएपेन्डीसाइटिस-टाई फोड (आंत
ति ज्वर) डायसेन्ट्री (सग्रहणी) क्षय रोग
ादि भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं-डा० कोफ़-
ी यह जाहिरात मानने योग्य है कि मांसाहा-
एपेन्डिमा ... म सामान्य रोग हो गया है,
... मास में इस रोग के जन्तु
... के ... में रहे हुवे समस्त मांस को
आ... ...से वे रोग ... होकर भारी

भावार्थ-मांस से पिशान (पीसे हुवे पदार्थ) में दस गुना, पिशान से दूध में दस गुना, दूध से नाज में आठ गुना और नाज मे घी में दस गुना बल होता है।

इससे यह स्पष्ट हो गया है कि मांस पौष्टिक खुराक नहीं है-मांस खाने से प्रायः अजीर्ण (Indigestion) रोग हो जाता है जो सब रोगों का मूल है; कारण कि भारी और कुत्सित आहार से होजरी बराबर काम नहीं करती चार्ल्स डबल्यू फार्वर्ड भी इसमें सहमत है।

डा० रावर्ट बेल एम् डी एफ आर. पी ओ. ने अपनी Cancer Scourage केन्सर स्कारेज पुस्तक में लिखा है कि मांसाहार सिर्फ इंगलेण्ड और वेल्स में प्रति वर्ष ३०००० तीस हजार मनुष्य नासूर के रोग से पीडित होकर मरण शरण हो जाते है और इस हिसाब स दुनियां भर में करीब २५०००००० ढाई क्रोड आदमी इस ही रोग से प्रति वर्ष मृत्यु के मुख में चले जाते हैं, यह कितना दुखद प्रसग है-किसी एक दृष्टि से यह उचित भी है कि राज्य कानून भग करने वाले को दण्ड दिया जाता है और खूनी को फांसी दी जाती है, उसही प्रकार प्रकृति के नियमों के भग करने वाले मासहारियों

को कुदरत की ओर से छोटे-बड़े रोगों की सजा दी जाती है और विशेष अपराधी को नासूरादि भयङ्कर रोगों द्वारा प्राण दण्ड दिया जाता है।

डा० लीओनार्ड वीक्वम्स का यह कथन है कि—मांसाहार से ८५ फी सदी मनुष्य गले की आंतों के रोग से दुःख पाते हैं—इससे दान्तों का रोग होकर दान्त सड़ने लगते हैं और पायोरिया (दान्तों में पीप का रोग) हो जाता है।

डा० पोल कार्टन का यह वक्तव्य यथार्थ है कि मांसाहार से डिस्पेप्सियाएपेन्डीसाइटिस-टाई फोड (आंत का रोग-मोति ज्वर) डायसेन्ट्री (संग्रहणी) क्षय रोग और नासूरादि भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं—डा० फ्रेम्स वेलो की यह जाहिरात मानने योग्य है कि मांसाहारियों के लिए एपेन्डिमाइटिस सामान्य रोग हो गया है, कारण कि पशु-पक्षियों के मास में इस रोग के जन्तु होने से मांसाहारि के शरीर में रहे हुवे समस्त मांस को चेप लग जाता है और इससे वे रोग ग्रस्त होकर भारी यातनाएँ भोगते हैं।

मांचेस्टर के डी होले के कथन से यह साबित होता है कि मांसाहार से गठिया-जलोदरादि लीवर एवं कीटनी से सम्बंध रखने वाले दर्द उत्पन्न होते हैं, कारण कि इन रोगों का उत्पादक युरिक एसिड है और यह मांस में अधिक मात्रा में होती है-डा० जोन नुइटन को यह मालूम है कि नाइट्रोजन वाले पदार्थों से सन्धि वायु (गठिया वाय) आदि लीवर के रोग उत्पन्न होते हैं और नाइट्रोजन मांस में रहता है, अतः मांस से यह बिमारियाँ पैदा होती हैं। डा० फार्कर सन का भी यह मानना है।

विदेशी हेरियन विद्वानों ने परामर्श कर यह निश्चय कर दिया है कि मास खाना किसी मसरफ का नहीं है Good for nothing देखिये ग्रामले केन लेडी मारग्रेट हॉमपिटल के सीनियर डाक्टर मि० जोशिया ओलडफिल्ड डी सी एल एम ए एम आर. सी एस एल आर सा पी लिखते हैं कि—

'Flesh is unnatural food and therefore tends to exate functional distur bones As it is taken in modern civilization it is affected with such terrible diseases (Readily commxeimicable to man) consumption, fever, intestinal, worm

ect, to an enormous extent. There is little need of wonder that flesh eating is on of the most serious causes of the diseases that carry of ninty nine out of every hundred peaple that are born

(Dr Josiah Old Field)
D C L M A M R C S L R C P .

भावार्थ—मांस सृष्टि क्रम से विरुद्ध खुराक है और इसही वजह से इसके खाने से शरीर के कितने ही भागों में खराबी पैदा हो जाती है, अर्वाचीन समय में उसको खाने से मनुष्य को नासूर क्षय-ज्वर और आन्तों के खतरनाक रोग भयंकर रूप में उत्पन्न होते हैं, मांसहार बिमारियों की उत्पत्ति का एक गम्भीर कारण है और इससे नन्नानवे फी सदी मनुष्य मरण शरण हो जाते हैं, यह बात निर्विवाद है।

उपरोक्त डाक्टरों के मत का यह सारांश है कि मांस में वैपेलिक जन्तु (जहरीले जन्तु) रहते हैं, जो मांस पक जाने के बाद भी नष्ट नहीं हो सकते, उनसे अनेकानेक प्राणनाशक रोग उत्पन्न होते हैं, इससे यह स्पष्ट होता है कि मांसाहार शरीर का विनाशक है—

मांसाहार से दिल और दिमाग बढ़ता है, यह तो मात्र बालिशता का ही प्रदर्शन है—आमिष भोजी का हृदय क्रूर और जनूनी बन जाता है, कोमलता तो सदा के लिए शीख ले जाती है, इस भोजन से स्वान्त पर बड़ा बुरा असर पड़ता है, हृदय निःसत्व हो जाता है, कारण कि नसें कमजोर होकर पतली पड़ जाती हैं; ऐसा डॉ० एच० एस० कुमर का बयान है—अन्न शाकाहार वालों के हृदय की धड़कन से मांस भक्षी के हृदय की धड़कन दस गुनी होती है, ऐसा मि० जे० एच० ओलिवर का कथन है; इससे यह साफ समझा जाता है कि एक मिनिट में १० गुना तो एक घंटे में ६०० छः सौ गुना अधिक जोर से चलता है, इसका परिणाम सहज ही समझा जा सकता है कि ऐसे कमजोर दिल के अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

यह तो मानी हुई बात है कि मन की इच्छा हमेशा स्वाभाविक भोजन की तरफ ही दौड़ती है और उसे प्राप्त करने का सतत प्रयत्न करती है—जैसे बकरी हरे पत्तों की ओर लपकती है, बैल घास पर टूट पड़ता है, ऊँट पान को आनन्द से खाता है और कबूतर दाने पाते ही गहूर गूँ गहूर गूँ की रट लगाता है, इसी तरह

मनुष्यों के सामने एक ओर अंगूर – आम – नारंगी – अनार – बादाम – पिस्ता – द्राक्षादि रखें हों और दूसरी ओर मांस के छिछड़े हों तो भला फल और मेवा पसन्द करते, उस मांस को सूँघेगा भी कौन ? एक ओर गुलाबजामुन रसगुल्ला – जलेबी – मिश्रीमावा – मलाई के लड्डू घेवर – फीणी आदि मिठाईयाँ रक्खी हों और दूसरी ओर दुर्गंध युक्त मछलियाँ रक्खी हों, तो कौन ऐसा मूर्ख है कि ऐसी रसवती और सौगंधित मिठाईयों को छोड़ कर मछलियाँ खाय ? मनुष्यों को बागों में हरियाली धान से भरे खेत और फूलों से लदे वृक्षों को देख कर जो आनन्द होता हो वह क्या खून और हड्डियों से भरे मांस से हो सकता है ? मनुष्य अपने मकान के पास बगीचा लगाता है, पर क्या कोई कसाई खाना बनवाता है, लोग बागों में तफरी करने जाते हैं, पर क्या कसाई खानों में जाने की किसी की इच्छा होती है–इससे यह ज़ाहिर होता है कि दिल अन्न-दूध-घी-शाक-पान और फल से बढ़ता है; अर्थात् बलवान होता है।

, अब रही दिमाग बढ़ने की बात यानि बुद्धि बढ़ने की बात, इसमें तो उतनी ही सत्यता है जितनी कि

वन्ध्या पुत्र की सिद्धि में, मतलब कि यह बात काबिल मंजूर करने के नहीं है।

कुत्सित और भारी आहार मांस से बुद्धि बढ़ने का यह नवीन आविष्कार शायद राक्षसी समाज से हुआ होगा, बुद्धिवाद का तो यह मानना है कि भारी पदार्थों से अकल खपत हो जाती है, या दबती हुई क्रमश: नष्ट प्राय हो जाती है, जहाँ क्रूरता का साम्राज्य हो और जनूनी जोश का दौर दौरा हो, वहाँ विकाश वर्द्धमान नहीं हो सकता, वरन अस्ताचल के प्रति ही उसका गमन होता है इससे जंगलीपन उसमें पैदा हो जाता है।

आपको खयाल होगा कि दिमाग का घना सम्बंध आहार के साथ है, अन्न और फलाहार में शान्त तत्त्व है और मांसाहार में उग्र तत्त्व है इसीसे फलाहारी का दिमाग शान्त-स्वच्छ और ताजा होता है, मांसाहारी का इससे उलटा क्रूर-म्लेच्छ और सड़ा हुआ दिमाग होता है।

संसार में प्राचीन और अर्वाचीन ऐसे अनेक दृष्टान्त हैं कि मांसाहारी से फलाहारी बल और बुद्धि में चढ़ा बढ़ा होता है बहुत से फलाहारी राजाओं ने मांसाहारी राक्षसों का पराजय किया है, वर्तमान में भी

शाकाहारी पहल्वान् गामा ने विदेशी मांसाहारी पहलवानों को पछाडा है। मिस्टर राममूर्ति ने दूध और फल के बल पर चलती मोटर को रोक देना, सीने पर हाथी खडा कर देना वगैरा पराक्रम के अद्भुत प्रयोग करके दिखाये हैं—आविष्कारों के वैज्ञानी भी प्रायः मांसाहार से दूर रह कर फलाहार अधिक पसन्द करते हैं, बडे बडे दिमागी काम सात्विक खुराक वाले ही कर सकते हैं—इससे यह प्रत्यक्ष होगया कि मांसाहार से दिल और दिमाग़ (बल और बुद्धि) बढता है, यह मात्र भ्रम है।

इस देवभूमि समान भारत भूमि पर मांसाहार और चर्बी के लिये कितने जीव कत्ल किये जाते हैं, इसका आपको पता है ? शायद आप इन्कार ही करेंगे, और क्यों न करें ? आपतो अपने हाल में मस्त है, आपको दूसरे की क्या पड़ी है।

सिर्फ बंबई बादरा के सरकारी कसाई खाने का रोमाञ्चित दृश्य के हाल सुनेंगे तो आप अवश्य ही शिहर उठेंगे और वहा के कत्ल किये गये जानवरों की संख्या सुन कर तो कठोर हृदय के भी नेत्रों में से मोति टपकने लग जायगे, जरा ध्यान पूर्वक बाँचिये—

❀ बांद्रा कतलखाने का दृश्य ❀

बांद्रा में हर रविवार को गायों का बाजार (हाट) भरता है, देहातों से भूख—तृषा सहन करती हुई गायें स्पेशियल रेल में भरी हुई बांद्रा में इकट्ठी होती हैं, वहाँ पन्द्रह पन्द्रह, बीस-बीस की संख्या में गले में फाँसा डाल कर दोनों तरफ रस्सी द्वारा खीलों में बांध दी जाती हैं। यद्यपि म्युनिसीपालिटी की तरफ से प्रत्येक जानवर को आठ रतल घास डालने का नियम है, तदपि देखने वालों को अनुभव होगा कि शायद ही ये घास खाते और ओगालते नजर आते होंगे। बहुत वक्त गायें वहीं की वहीं मर जाती हुई दिखाई देती हैं, इस प्रकार मूक प्राणी भूख-तृषा-परिश्रम का दुःख सहन करता है, आखिर उनका वध कर दिया जाता है।

गायों के माफिक भैंसों का बाजार नहीं भरता है, पर हमेशा बम्बई के तबेले में से कसाई लोग खरीद करके बान्द्रा में इकट्ठी करते हैं। गायों के मुआफिक भैंसों की भी दशा होती है, चौमासे में जिस जगह भैंसें

बाधी जाती हैं, वहाँ दो दो फीट के करीब कीचड़ जमा रहता है, बेचारियाँ उनमें फँसी रहती हैं, ऐसी हालत में उनको घास डालने में आवे तो भी कीचड़ के कारण उनके मुह में बहुत कम आता है, 'काल में अधिक मांस' की तरह वहाँ के कसाई और चमडे के वेपारी माल पर खने आते हैं, वे गरम-गरम लोहे के सळियों से भैंसों को पीठ पर दाम लगा देते हैं, इस तरह उनके कत्ल तक उन पर भारी सितम गुजारा जाता है-शाम के समय भैंसों कत्ल खाने में ले जाई जाती हैं, उनका वध होने के पहिले उनमें रहा सहा दूध निकालने का प्रयत्न किया जाता है, अज्ञात आदमी को दूध नहीं देने की हालत में वह जुल्मी लोग जहाँ तहाँ लाठियों के फटके मारते हैं, इससे भय घबराहट से उनको पखाना पेसाब हो जाता है और वे लोग जितना निकाल सकें उतना दूध खींच लेते हैं।

म्युनिसीपालेटी का यह कायदा है कि गर्भवती गईयों का काटना नहीं, पर नजर स देखते वालों का कहना है कि कम्पाउण्ड में खडी हुई गईयों में से, कइयक के बच्चे जन्मते हुए वहाँ देखे गये, इसके अतिरिक्त बान्दरा से छुडाई हुई गायों में से किसी किसी गाय को बचा देते

हुए देखा, इससे यह स्पष्ट है कि यह कानून मात्र पीने पीने का ही है, गर्भवती गायों बराबर वध की जाती है, म्यु० को चाहिये कि इसपर कड़ा निरीक्षण रखें थोड़े दिन पहिले म्युनिसीपालेटी ने एक नियम बनाया है कि ८ साल वर्ष की गाय भैंस नहीं काटी जाय,इस प्रशंसा पात्र टाक को, देश हितैषी काउन्सिलरों ने भी इसकी तरफ ध्यान मन दिये, पर इसमें दहशत यह रहता है कि ज्यादा गायें जिस तरह छूटे नीचे कटती है उस तरह इस नियम का भी दिवाला न निकल जाय, इसके लिए काउन्सिलरों में से एक सब कमेटी नियत कर वक्त वक्त पर कसाई खाने की मुलाकात लेकर जांच करते रहें, इस पर पूरा ध्यान दिया जाय।

चार बजे गाय को कसाईखाने का दरवाजा खुलने का समय है, उसके पहले नाटक शाला के दरवाजे खुलने की राह में जिस तरह भीड़ जमा होती है, उसी प्रकार कसाई लोग अपने ढोरों का रस्सियों से बांधे हुए दरवाजा खुलने की प्रतीक्षा में खड़े नजर आते हैं, दरवाजा खुलता है उस समय म्युनिसीपालेटी का क्लार्क कसाईयों के ढोरों की संख्या की नोंध करता है—यह इसलिए कि म्यु० एक गाय के कटने के पीछे १॥ रु० और भैंस के पीछे १५ रु० टेक्स लेती है, पर

गापपूर्ण कमाई वर्ष भर में करीब पाँच लाख की होती है, इसका उपयोग जान या अजान से बम्बई की प्रजा कर रही है।

प्रात काल में कत्ल खाना साफ धोया हुआ होने से और कत्ल का कोई चिन्ह न होने से पहिले तो बिना सकोच वे जानवर सीधे अन्दर चले जाते हैं, इस वक्त कसाइयों के आदमी कमर में दो दो, चार-चार छुरे मसाले हुवे तैयार होकर आते हुवे दिखाई देते हैं। खास लक्ष खिंचने लायक एक ठिगना बुड्ढा आदमी लम्बा तीक्ष्ण छूरा लेकर अन्दर प्रवेश करता हुवा नजर आता है, उसका काम मात्र जानवरों के गले पर छूरी फेरने का होता है, मतलब कि समय पर सब अपना अपना सरजाम ले लेकर हाजिर हो जाते हैं।

पहिले गाय का मस्तक पकड कर गला दबाते हुए जमीन पर पटकते हैं, पीछे चारों पेर एक नाडी रस्सी से मजबूत बाध देते हैं, पास में खडी गइयाँ टगर टगर देखा करती है, उस वक्त उनको कितना कष्ट होता होगा उसे आप स्वय अन्दाजा कर लेना, इस तरह तमाम गायों को नीचे पटक पटक कर पेरों से बांध दी जाती हैं बस

तो मजबूत जानवर हाने म धकाधक नीचे गिरा नहीं सकते, इसलिये पहिले अगले पर मजबूत बांध दिये जाते हैं, पीछे उसी रस्सी से पीछले पर कसते हीं धड़ाम से भैंस नीचे गिर जाती है, बाद चारों पेर इकट्ठे जकड़ दिये जाते हैं, इस वक्त कसाईयों के लड़के जितना बिर सके उतना स्तनों में से दूध निचने में लग जाते हैं, इस समय उन जानवरों का भय और प्राण की कोई मोमा नहीं रहती, इधर दूध निच निच कर निकालने का काम चल रहा हो, उधर से वह यमराज समान हाथों में लप पप हुवा वह ठिगना आदमी लम्बा छूरा लेकर वहाँ पहुच जाता है, दो तीन आदमी उस भैंस का मोंणा ऊंचा उठाकर अधर रा रखते हैं, इतने में वह काल समान आदमी उसके गले पर गहरा छूरा दाल देता है, इस वक्त जैसे पाणी का नल फटने से धोतधार पानी निकलने लगता है, उसी तरह उसके गले से लोही के धोत छूटते हैं बिचारे निराधार प्राणी आधा घन्टा तड़फ तड़फ कर आखिर मरण शरण होते हैं, प्राण निकलने तक जीभ और आंख के डोले बाहर निकल आते हैं, पैर तड़फते हों और श्वास का घुर्राट चल रहा हो, उस वक्त के दुःख की कल्पना वाचक महाशय आप स्वयं कर लेना,

फिर आंख मूंद कर दृश्य को निहालना कि अन्दर किस तरह कितनी असर हुई, इस तरह पास में खड़े जानवर टगर टगर देखते हुए कांपते हैं, छाती धड़कती है, आँखों में से टप-टप आँसू गिरते हैं, इस त्रास का माप भी वाचक पर ही छोड़ देते हैं-भैंसों के मानिन्द ही गायों का कत्ल होता है।

कत्ल खाने में ज्यों ज्यों जगह खाली होती जाती है त्यों त्यों नये ढोरों को कम्पाउण्ड में दाखल करते जाते हैं, ज्यों ही कत्ल खाने के नजदीक आते जाते हैं त्यों ही लोही की गंध आने से जरा चमकते हैं फिर आगे बढ़ते अटकते हैं इतने में ऊपर से मार पड़ने लगती है, जिससे आगे बढ़ते हैं, परन्तु अन्दर के भाग में तड़फते हुए जानवरों पर जब नजर पड़ती है तब शीघ्र ही वे अपने काल को देखते है और यमपुरी में ले जाय जा रहा है, ऐसा प्रतीत होने से जीव लेकर भागते हैं, श्वास समाता नहीं, मुंह में झाग निकलते हों, ऐसी दयाजनक स्थिति में उनको मार पीट कर किसी तरह भी अन्दर दाखिल करते हैं, जहाँ सख्या बध प्राणियों के लटकते शरीर, ताजे बध किये हुवे और तड़फते हुए अनेक जानवरों के बीच इन ढोरों को प्राणों का नाश करने के लिए लाते

गाय बैल काटे जाते हैं इस उपरान्त लश्कर के लिए इन कत्ल खानों के मारफत २०७१४८४६ दो क्रोड सात लाख चौदह हज़ार आठ सौ छयालीस पाउण्ड मास के लिए १०००००० दस लाख गाय बैल काट दिये जाते हैं।

इस के अतिरिक्त छोटे-बडे कसाई खानों की तलास तो अछूत ही पडी है, शायद ही कोई शहर या बडा गाव ऐसा बचा होगा, जहाँ कसाई खाना न हो, यह सब मांसाहारियों के लिए ही होता है।

इस स्थान पर मुझे एक बात याद आगई कि थोडे समय पहिले मथुरा में गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया का एक जबरदस्त कत्लखाना (वर्तमान कत्ल खाने का बडा बाप) खोलना चाहती थी, मगर अहिंसा के अवतार महात्मा गांधी और हिन्द के बडे बडे नेता और पब्लिक कार्यकर्ताओं ने अथक प्रयास करके बन्द करवाया-धन्य हो !

कत्लखानें और कसाई खानों से ही मांस भक्षकों के हिंसा की समाप्ति नहीं होती, पर देव देवियों का बलीदान और बकराईद राहु के समान अपने स्वतन्त्र काले प्रकाश में जुदा ही कालाकृत्य करती है—

खाने में शारिरीक, हार्दिक, बौद्धिक और आत्मिक नुकशान होते हैं, तथा हिंसा किसी तरह नहीं ... मात्र धर्म के फैलावे की गरज से ही इस गलत रास्ते को अपनाना पड़ा है, बौद्ध भगवान् ने तप किया था ... जोर से लग रही थी, पारणे के दिन एक नदी के किनारे मरा हुआ मच्छ देखा, यह मान करके कि मरे हुए को खाने में दोष नहीं, उसे भक्षण कर लिया ... से मांसाहार इस धर्म में आरंभ हुवा जो ... जोर पकड़ गया है, मगर हमारी उपर की ... रास्ता गलत साबित है।

जब से मांसाहारादि के लिए पशु वध ... लगा तब से दूध, घी महगा हुवा और ... मिलने लगा 'आईने अकबरी' प्रसिद्ध ... से मालूम होता है कि अकबर बादशाह ... आने मन दूध और एक आने सेर ... था, तब आज साढे सात रु० मन दूध और ... मन घी वह भी बढिया और मनमाना नहीं ... ही ... मुख्यत्वेन मांसाहारियों के ही शिर

※ तीसरा व्यसन मदिरा ※

यद्यपि मदिरा (Wine) शब्द का अर्थ शराब होता है परन्तु भंग, माजुम, चरस, गांजा और अफीमादि तमाम मादक पदार्थों का इस व्यसन में समावेश हो जाता है; कॉफी और कोकीन भी इसमें गिना जा सकता है, अर्थात् समस्त नशीली चीजें इसमें शुमार हैं।

कोई कहता है कि नशे में भूख अच्छी लगती है, कोई कहता है वैषयिक खूब मजा आता है, कोई कहता है इसमे हृदय बडा प्रसन्न रहता है, कोई कहता है दिमाग खूब काम करता है, कोई कहता है इससे निगाह अच्छी जमती है और कोई कहता है ध्यान बढ़िया होता है, हम कहते हैं जान बूझ कर पागल बनने का यह एक निन्द-नीय रास्ता है, अब जरा इस पर विचार कर—

नशे से भूख ज्यादा नहीं लगती पर बेभानता से अधिक खा लेते हैं, इससे सब रोगों का मूल अजीर्ण रोग हो जाता है। विषय की अधिकता होजाने से शरीर कमजोर बन जाता है, इससे हृदय प्रसन्न नहीं रहता, पर अमूझन होती है, इसमे दिमाग अस्तोव्यस्त काम करता

है, निगाह जमती नहीं किन्तु एक धुन मवार हो जाती है, इससे तो माय' आदमी ध्यान भ्रष्ट होजाता है; शराबी भंगेरी वगैरह की दुर्दशा तो प्रत्यक्ष नजर आती है रास्तों में-घरों में महल्लों में और जिधर-किधर गिरते, लथडाते, बकते और कुचेष्टा करते चश्मदीद होते हैं, विवेक और सभ्यता को तो मानो देशनिकाला हो जाता है, मां बहन पत्नी पुत्री; सब के साथ बुरे शब्द बुरी चेष्टाएँ और बुरा वर्ताव करने लग जाता है, एक कवि ने ठीक ही कहा है—

शराबी मदमस्त हो। फिरे डोलते छेल ॥
सींग पूछते रहित सो। निश्चय जानो बेल ॥१॥
नशा न नर को चाहिए। द्रव्य बुद्धि हरलेत।
नीच नशा के कारणे। सब जग ताली देत ॥२॥

शराब में देश के करोड़ों रुपैये बरबाद हो। है सन् १९२०-२१ म मात्र परदेशी शराब में चार क्रोड नव्वे लाख दो हजार ४९०,०२००० रु० खर्च हुए, देशी दारू में लाखों रु० का खर्च होता है वह सब जुदा है। भारत में शराब के पीछे करीब ८० क्रोड़ रुपैया सालाना

खर्च होता है, जिसमें ६० क्रोड तो नीची श्रेणी के मजदूरादि में ही हो जाता है। इतना अनाप सनाप व्यर्थ खर्च होने पर भारत को रोटी पूरी कैसे मिल सकती है? सख्यातीत मनुष्य रोटी बिना टल्वलें इसमें आश्चर्य क्या?

इस व्यसन से शरीर में नाना रोग उत्पन्न होते हैं— डा० रोमेन्ट का कहना है कि शराब पीने वाले की होजरी में घेन और आवेश पैदा होता है, इससे पाचन क्रिया मन्द होकर रस की थैली निकम्मी बन जाती है और बिगडे हुवे स्थान पर चान्दियाँ पड जाती हैं।

इससे जीवन का अन्त करने वाला क्षयरोग (Phythesis) उत्पन्न होता है, जिससे जीवन को आखिरी सलाम करा देता है, इसस वीर्य पतला पडकर कमजोरी पैदा करता है और क्रमशः अगणित रोग उत्पन्न हो जाते हैं–विद्वान् डाक्टरों ने यह भी साबित कर दिया है कि मदिरा पान से स्नायु मगज-ज्ञानतन्तु कलेजा और मुत्राशय वगैरा अवयव सडते जाते हैं।

डा० कारपेन्टर ने यह सिद्ध किया है कि स्तन के

५०० पांच सौ हिस्सों में एक हिस्सा शराब का मिल जाने से उसके अणु तथा रेसे बदल जाते हैं और इससे खून खराब हो जाता है एक विद्वान् डा० का कहना है कि जिस तरह समुद्र के खारे पानी की भाफ (Steam) शीघ्र तैयार होकर एन्जिन को झडप से चलाती है और पीछे वह रुक जाता है,इस ही तरह केफी (नसीली) चीजें शरीर के सचों को वेग से चलाती हैं और ताकत तथा स्फुर्ति नजर आती है, मगर पीछे शरीर और सांचे दोनों का नाश होता है-मि० पी० कोलोलीअन नाम के मख्यात पाश्चिमात्य शोधक ने जाहिर किया है कि चाहे जिस तरह का शराब मच्छ तक प्राणिया को तथा वन स्पति तक को जहर समान है, तो फिर मनुष्य के लिये तो हलाहल जहर है ही, अत इसके सगी का प्राण लेता है।

व्यसन मुक्त का कलेजा बडा मुलायम होता है, इधर नशा पान करने वाले का कलेजा 'स्टीजठोक' कठिन कहलाता है, वह धीरे २ बेकार हो जाता है, इस से हृदय के धडकन आदि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, यही दशा मगज की भी होती है, पत्थर जैसा कठोर हो जाने से विचारहीन बन जाता है।

शराब नीति का शत्रु होने से अपराधों का जिम्मेवार भी है, इसके नशे से ६६ फी सदी मनुष्य हमले के ६६ फी सदी लूंट के और ७७ फी सदी बलात्कार के गुन्हेगार होते हैं, ऐसा जर्मनी में मालूम हुवा है।

डा० विलार्ड पारकर का अनुभव है कि २० से ३० वर्ष की उम्र के फी सदी ५२ युवक-युवतियों का मदिरा पान से मरण होता है–२२ वर्ष की उम्र में सामान्य आदमियों को ४४। वर्ष अधिक जीना मिलता है तब शराबी को मात्र १५॥ वर्ष अधिक मिलता है, एव ३० वर्ष की उम्र में सामान्य मनुष्यों की ३२ वर्ष अधिक जिन्दगी होती है, तब नशेबाज १४ वर्ष मात्र ज्यादा जी सकते है, इस तरह विना मौत मरते हुए सख्यातीत मनुष्य खतम हो जाते हैं, अत यह राक्षसी कुप्रथा है।

इस दुष्ट व्यसन का सेवन करने वाले अमीर गरीब, राजा रक, मूर्ख और विद्वान सब ही आसक्त होते हैं–थोडे ही समय पहिले बडे बडे शाह बादशाह–राजा और महाराजा इस नशे में तल्लीन होकर नष्ट हो गये हैं। मुसलमान बादशाहों में भी कइएक इस व्यसन से गारत हो गए हैं बहुत दूर न जाइये महाप्रतापी

चौहान बड़ा शराबी था, उससे वह एक स्त्री के फन्द में पड़कर पागमाल हो गया था—पूर्व काल में यादवों का नाश और द्वारिका की राख इस ही व्यसन से हुई थी—आज कल के कई क्षत्रिय इस व्यसन में लीन हो रहे हैं, छोटे बड़े लोग भी इससे बचे नहीं हैं, ब्राह्मण और महाजन भ्रूण हत्या की तरह इसे गुपचुप सेवन करते हैं, सम्भवतः चारों वर्णों में से एक भी वर्ण सम्पूर्णतः नहीं बचा है—मुसलमीन धर्म तो शराब की सख्त मनाई करता है, फिर भी धर्महीन मुसलमान बाज नहीं आते, अंग्रेज लोग भी बरांडी कसरत से पीते हैं, सार्जेन्ट लोग तो प्रायः रात के समय नशे में चकनाचूर रहते हैं;ऐसे शराबियों से सुशासन की आशा नहीं रखी जाती और यहां दूरी के काम पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता। इसके पागलपन की धुन हा अन्धाधुन्धी मचाती है।

नशे से क्या क्या नुकसान होते हैं, उसे जरा आप सुनिये —

मद्यं मोहयति मनो मोहितचित्तस्तु विस्मरति धर्मम् ॥
विस्मृत धर्मा जीवो। हिंसामविशङ्क माचरति ॥१॥
चित्तभ्रान्तिर्जायते मद्यपानाद्-
भ्रान्ते चित्ते पापचर्यामुपैति ॥

पापं कृत्वा दुर्गतिं यान्ति मूढाः।
तस्मान्मद्यं बुद्धिमद्भिर्न पेयम् ॥२॥

भावार्थ—मदिरा मन को मोहित (विचार शून्य उन्मत्त) करता है और उन्मत्त चित्त धर्म को भूल जाता है, तथा धर्म को भूला हुआ प्राणी स्वच्छन्द होकर हिंसा को आचरने लग जाता है ॥१॥ मदिरा पान से चित्त भ्रान्त हो जाता है और भ्रान्त चित्त होने पर पाप की आचरणा प्राप्त होती है, तथा पाप करके मूर्ख लोग दुर्गति में पहुँच जाते हैं, इसलिये बुद्धिमानों को मदिरा पान कदापि न करना चाहिये ॥२॥

अफीम (अमल) जो नशे में शामिल है, उसको खाने वाले वीर्यहीन और पगुले बन जाते हैं, इससे कब्ज मन्दाग्नि, रक्त की न्युनता, फेंफडे और गुर्दे के रोग और आँतों में कमजोरी पैदा हो जाती है, अफीमची अव्वल दर्जे का आलसी, निद्रालु और दरिद्री होता है, उसके मुह में लार टपका करती हैं और मक्खियां भिनभिनाती रहती हैं, मूर्ख माता अपने आराम के लिये बच्चों को अफीम देकर उनकी उगती अवस्था वीर्यहीन और रोगी बना देती है चीन देश में अफीम का खाना

कसरत से होता था पर वहाँ की सरकार सचेत हो जाने से कतई बंद कर दिया और खाने वाले पर जुर्म लगा दिया गया, इससे वह देश सुरक्षित हो गया, परन्तु भारत अब तक भी कुंभकरणी निन्द्रा ले रहा है–चीन में अफीम जाना बन्द हो जाने से जो कि भारत को गजब का नुकशान उठाना पडा, पर इससे नैतिक जीवन के पतन की काफी रक्षा हुई, वह इस नुकशान से कई गुना अधिक लाभ प्रद है। अफीमची अफीम में, भंगेरी भांग में, गांजा चरस के पीने वाले उनमें, कोकिन और मोर्फि वाले उनमें और शराबी शराब में जितने गुण बताते हैं, उनमें उनकी मात्र भ्रमणा है।

भारत सरकार और देशी नरेशों का चाहिए कि इस नशेली चीजों पर कड़ा नियंत्रण करें और इतना अधिक टैक्स लगा दें कि यह व्यसन स्वय ही देश से निकल जाय, इन चीजों के ठेके तो जरूर होते हैं, पर राज्य ने अपने फायदे के लिए यह रास्ता कायम किया है, प्रजा को भी इसके बहिष्कार का जोरों से आन्दोलन करना चाहिए–हमारे कांग्रेस मिनिस्टरों ने करीब दो साल पहले बॉबे प्रेसिडेन्सी आदि प्रान्तों में शराब बन्द करवा दिया था, उस समय रोजी के भक्त पारसी भाईयों

ने खूब गुलशोर मचाया था, आखिर कानून पास हो गया और उसका अमल भी होने लग गया. सत्याग्रह के बावजूद मिनिस्टरों के रिजाइन हो जाने के कारण स्वार्थ लोलुपियों के प्रयत्न से कोर्ट ने छूट देदी बताते हैं, अगर ऐसा हुवा हो तो सच मुच ही बहुत बुरा हुवा, यह प्रयत्नीय है कि पुन प्रयत्न करके इसको देशवट्टा दिलाया जाय।

धुम्रपान (हर क़िस्म की तम्बाखु का पीना, खाना और सूँघना) भी कैफी चीज होने से इस व्यसन मे गिना जा सकता है, इसके सेवी कई फायदे पेश करते है-पीनेवाला कहता है, इससे वायु नष्ट होती है, खाने वाला कहता है इससे पेट साफ रहता है, पाचन अच्छा होता है, सूँघने वाला कहता है, नेत्रों की ज्योति अच्छी रहती है और मगज तर रहता है,व्यसनी भी कमाल करते हैं, व्यसन के यश गाथाओं का भी आलाप करने लगते है, पर यह सब भ्रम मात्र है-तम्बाखु खाने से कलेजा जलता है, हाथ और होठ दागीले हो जाते हैं, दान्तों का रोग हो जाता है और खांसी की कायमी बीमारी लागु पड जाती है, "कलह का मूल हाँसी और रोग का मूल खांसी" इस नियमानुसार अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

खाने से आन्तों सड़ती है और इसमें अनेक रोग पैदा हो जाते हैं सूँघने से नाक और मस्तक कमजोर हो जाते हैं, कफ बढ़ता है और पवित्रता तो हवा खा जाती है। व्यसन से कभी लाभ हो तो वन्ध्या के पुत्र जरूर हो और करतल में बाल भी अवश्य उगने लगें।

महानुभावो ! जरा फुरसत के समय शान्त मगज कर स्थिर बुद्धि द्वारा उपरोक्त व्यसन पर विचार करना, परामर्श करना और ऐहिक तथा पारलौकिक लाभ के खातिर इस त्याग करना, आप अगर शराबी हो, अफीमची हो, भगेरी हो, माजुम खाने वाले हों, गांजा-चरस और तम्बाखु के पीने वाले हों अथवा चाहे कॉफी और कोकिन के पुजारी हों तो आज ही इन से मुक्त होकर प्रतिज्ञा बद्ध होजाईयेगा, थोड़े ही दिनों में आपको हर तरह फायदा नजर आवेगा।



❀ चौथा व्यसन वेश्या ❀

वेश्या (Prostitute) शब्द से 'वेश्या गमन' अर्थ समझना चाहिए, इसको गणिका-पात्र-रंडी-भक्तन और विश्ववधू कहते हैं, आखिरी नाम पूरा अन्वयार्थ है, यह किसी खास की स्त्री नहीं होती जगत की पत्नी कहलाती है, सब के साथ पति के समान व्यवहार करती है, अतः लक्ष्मी की सदा सह चारिणी होने से पैसे बिना किसी को अपनाती नहीं है। कुमति लक्ष्मी और व्यभिचारिणी वेश्यासा संयोग ढूंढा नहीं मिलता। ठीक ही कहा है—

जब तक पैसा पास रहेगा। मीठी बात सुनावेगी॥
कंगाली की यार हालत में। जूते मार निकालेगी॥१॥

इसकी मीठी वाणी, हाव भाव, कटाक्ष नेत्र, कला कौशल्य और अद्भुत शृंगार मनुष्य को पानी पानी कर देता है, उसकी सारी ठकुराई और दृढता ठिकाने लग जाती है, इज्जत आबरू-खानदानी और व्रत नियम हवा खाने लग जाते हैं, समझदारी और सभ्यता के दिवाले

की दरखास्त लग जाती है, व्यभिचारियों के लिए तो वेश्या का क्रीड़ाभवन स्वर्गपुरी बन जाता है, मगर एसे लोग लाभ हानि का कुछ भी खयाल नहीं करते। अब उसके रंगमंच पर खड़े रह कर जरा दृष्टि पात करें कि किस कदर की हकीकतें है—

दर्शनाद्धरते चित्तं । स्पर्शनाद्धरते बलम् ॥
भोगनाद्धरते वीर्यं । वेश्या प्रत्यक्षराक्षसी ॥१॥

भावार्थ—देखने मात्र से चित्त हरा जाता है, स्पर्श से बल हरा जाता है, भोग में वीर्य हरा जाता है, अत वेश्या साक्षात् राक्षसी है-राक्षसी शरीर का खोखला बनाती है, इस तरह वेश्या भी नि सत्व बना देती है, अत यह उपमा चरितार्थ है।

आपको यदि कोई कह दे कि तेरी माता के दो खाविन्द हैं, तेरे एक बहन के नाते तीन बहनोई और एक पुत्री के नाते चार जवाई हैं तो आप अपनी इज्जत के लिये दगा मचा देंगे, परन्तु वेश्या संग से वह शुद्धाचार ऐसा लापता हो जाता है कि मामाओं को तो भान तक नहीं रहता, वेश्या के यहाँ

जाने की किसी को मुमानियत नहीं है, जो दाम दे वही जा सकता है तो फर्ज कीजिये कि आपने वेश्या गमन किया, इससे एक पुत्री पैदा हुई, यह मानी हुई बात है कि वह वेश्या का धंधा करेगी, पर शीलव्रत न पालेगी और न एक पति ही धारण करेगी, प्रत्युत सोलह शृंगार धारण कर अपने मकान के झरोके में बैठ चलते आदमी को हावभाव दिखा कर इशारे से बुलाएगी और विद्यमान पुरुष का अपने कटाक्षों से भान भुला कर सब धन पचा जायगी और मौका पाकर निकाल देगी, मतलब कि वेश्या का धंधा करने की हालत में, बाप-भाई या पुत्र कोई भी चला जाओ सब के साथ एकसा व्यवहार होता है, कदाचित आप वहाँ भी न पहुचे तो जरा उसके दरवाजे पर बैठकर लिस्ट तो बनाईये कि एक पुत्री और जबाई कितने ? हाँ—हाँ ! धिक्कार है ऐसे तिरस्कृत पुरुष को फिटकार है !

इस व्यसन से शारीरिक-व्यावहारिक और धार्मिक नाना प्रकार के नुकसान होते हैं। जरा ध्यान पूर्वक पढ़िये—

काया हू मे काम जात, गांठ हू से दाम जात।
नारी हू से नेह जात, रूप जात रंग मे॥
उत्तम सब कर्म जात, क्रूर के सब धर्म जात।
गुरु जन को शर्म जात काम के उमंग मे॥ १॥
गुण-रंग-रीति जात, धर्म हू से प्रीति जात।
राजा मे प्रतीत जात अपनी मत भंग मे॥
तप जात, जप जात, सन्तान हू की आशा जात।
शिवपुर का धाम जात, वेश्या प्रसंग मे॥ २॥

ऊपर के कवित्त को फिर से पढ़िये और विचारिये कितना नुकसान पहुँचते हैं—वेश्यागामी अपनी गृहणी कुलीन होने पर भी उससे नाराज रहा करता है, कभी वह नम्रता से कोई प्रार्थना करे तब भी मरता सा सामने आता है और वह दुष्टा गालियाँ भी दे तो हँस हँस कर सुनता है। शर्म! शर्म!! शर्म!!!

इस वेश्या से कइएक धन हीन तन्हीन और बुद्धि हीन बन जाते हैं, कइ को उपदंशादि (गरमी सुजाक) की बिमारी लागू पड़ जाती है, इससे सड़ सड़ कर और गल गल कर मरना पड़ता है, कइ को मांस खाना और

शराब पीना और चोरी करना सिखा दिया, दया, क्षमा, लज्जादि गुण इससे नाश होते हैं। वेश्या के संग प्रीति करने का प्रतिकार करते हुवे एक कविराज कहते हैं—

मन करो प्रीति वेश्या विष बुझी कटारी।
है यही सकल रोगन की खान दुःखारी मत० टेक०

औषधि अनेक है सर्प डसे की भाई।
पर इसके काटे की नहीं कोई दवाई॥
गर लगे घाव तो जीवित ही बच जाई।
पर इसके नैन के घाव से होय सफाई॥
है रोम रोम विष भरी करो ना यारी है यही० ॥१॥

यह तन-मन-धन हर लेत मधुर बोली में।
बहुतों का करे शिकार उम्र भोली में॥
कर दिये हजारों लोट पोट होली में।
लाखों का मन कर लिया कैद चोली में॥
गई इसी कर्म में लाखो की जमींदारी-है यही०॥२॥

हो गये हजारों केवल धीरज छारा।
लाखों का इसने यश नाश कर डारा॥

गठिया प्रमह आदिक से देश विमारा।
भारत गारत होगया इनही का मारा।
कर दिये हजारों इसने चौर जुआरी है यही ॥
इस ही नगनी ने मद्य मास सिखलाया।
सब धर्म कर्म को इसने धूल मिलाया॥
अरु दया क्षमा लज्जा को मार भगाया।
ईश्वर भक्ति का मूल नाश करवाया॥
हैं इसके उपासक रौरव (नरक) के अधिकारी है य
यह नवयुवकों को नैन सैन से खावे।
अरु धनवानों को चदद गदद कर जावे॥
धन हरण करे अरु पीछे राह बतावे।
करे तीन पार ला जूते भी लगवावे॥
पिटवा कर पीछे लावे पुलिस पुकारी है यही० ॥ ५॥
फिर किया पुलिस ने खूब अतिथी सत्कारा।
होगई सजा मिल गया मजा इश्क का सारा॥
जो झूठ हाय तो सज्जन करो विचारा।
दो त्याग झूठ करो सत्य वचन स्वीकारा॥
अब तजो कम यह अतिनिन्दित दुखकारी हैयही०॥६॥

इस गजल में इतना स्पष्टी करण किया गया है कि एक सामान्य समझ वाले को भी यह साफ-साफ मालूम हो जाता है कि वेश्या का प्रसग कितना खतरनाक है, धर्म कर्म से किस तरह हाथ धुला देता है; वेश्या को जोगणी की उपमा ठीक ही दी गई है -

करम फूटी जोगणी। तीन लोक को खाय॥
जीवित खाए कालजा। मरे नरक ले जाय॥१॥

वेश्या की प्रीति तो मात्र पैसे की ही सहचारिणी होती है, हरदम किसी को स्मरण में रक्खे, यह तो उसका सिद्धान्त ही नहीं है, परन्तु समय पर उसका बुरी तरह तिरस्कार कर देती है इस पर एक दृष्टान्त देकर चरितार्थ किया जाता है—

किसी एक गाव में एक धनिक रहता था, उसकी पत्नी साक्षात् लक्ष्मी का अवतार थी, पर दौर्भाग्यवश यह एक वेश्या की मुहब्बत में फँस गया था, मौज मजा में धन पूरा किया, स्त्री का जेवर तक भी बेंच दिया, पैसा पूरा होने पर वेश्या ने कहा—महानुभाव! पैसे

वह नौकर रसीद लेकर मालिक के पास पहुँचा, मालिक ने पूछा वेश्या को रु० क्यों नहीं दिया ? उसने सारी हकीकत बताकर कहा "आप न तीन में न तेरह में न छप्पन के मेरे में" बताईये आप किस पंक्ति के भड़वा हैं वह पुरुष लज्जित हुआ और तब से वेश्या का प्रसंग सर्वथा छोड़ दिया और अपनी प्रियपत्नी के साथ प्रेममय वर्तन करने लगा। सच है! कुलांगारों के सिवा वेश्या संग कौन कर सकता है ? सभ्य और शिष्ट पुरुष तो इससे सदा दूर रहते हैं।

मुमुक्षो! इस पिशाचिनी के सहयोग से ऐसे-ऐसे अनर्थ पैदा होते हैं कि जो कानों से सुनने योग्य नहीं और सुनने पर दिल बेचैन हो जाता है, नेत्रों में आंसू भादों बरसने लग जाता है, इस जगत निन्दनीय दुराचार को यहां तक कालिमा लगी है कि एक सहोदर के साथ भाई, पति आदि ६ रिश्ते हुए, इस ही तरह अपनी जननी के साथ ६ रिश्ते हुए, तथा भतीजे के साथ ६ रिश्ते हुए, इस प्रकार तीन जीव के साथ १८ अठारह नाते हुवे, यह सब एक भव की घटना है, यह अठारह नातों का बयान बड़ा विचित्र घटनात्मक और वैराग्योत्पादक होने से यहाँ उद्धृत करते हैं—

अठारह नातों पर—
❀ वैराग्योत्पादक दृष्टान्त ❀

जम्बू द्वीपान्तर गत भरत क्षेत्र में मथुरा नामक एक विख्यात नगर था, वहाँ अनेक राजाओं के परिवार में शोभित न्यायशील राजा राज्य करता था, बहुत से धर्मानुरागी लोग निवास करते थे, अनेक भव्य जिन मन्दिर अपनी भव्यता से जनता को धर्म पथ में परिवृद्ध करते थे।

उस नगर में कुबेरसना नाम की वेश्या रहती थी उपरोक्त व्याख्या से आपको यह ज्ञात हो चुका है कि वेश्या किसी की पत्नी नहीं होती, पशुओं के तुल्य वेश्या के भी कोई रिश्ता नहीं होता।

सज्जनो! एक वक्त वह वेश्या किसी जार पुरुष के साथ काम क्रीडा कर रही थी, इससे वह सगर्भा हो गई एक दिन उसके पेट में इतने जोर से पीडा होने लगी कि वह बेहोश हो गई, उसकी मा के प्रयत्न से वैद्यों की दौड धूप होने लगी, शरीर परीक्षा के पश्चात् यह महसूस हुवा कि इसे कोई अन्य बीमारी नहीं है, मात्र गर्भ के दर्द से दर्दित है, स्वयं ठीक हो जायगा। होश आने पर

उसकी मा ने कहा—बेटी ! यह गर्भ तेरा प्राण घातक है, इसे नष्ट कर देना ठीक है । उसने उत्तर दिया मुझे चाहे जितना कष्ट सहन करना पड़े, मैं अपने गर्भ की पूर्ण रक्षा करूँगी, यह सुन मा चुप हो गई ।

समय पर उसके एक युगल संतान (पुत्र पुत्री) पैदा हुवा, वेश्या अत्यन्त हर्षित हुई, उसकी माता ने एक दिन कहा—यह युगल तेरी कुसुमवत् खिलती हुई युवानी को बिगाड़ने वाला है, अत: इसे नासिका मलवत् त्याग कर दे और आजीविका रूप मदमस्त युवा अवस्था कायम रख ! इस आग्रह को स्वीकारती हुई दस दिन रखने की माता को प्रार्थना की जिसे उसने मंजूर किया — समय पर उनका नाम "कुबेरदत्त-कुबेरदत्ता" कायम किया, दोनों को अपने अपने नाम की अंगुठियाँ पहना एक लकड़ी की सन्दूक में सुला कर यमुना नदी में बहा दिया —अररर ! उन निर्दयों को जरा भी दया न आई !

अब वह पिटारा बहता हुवा शौर्यपुर नगर के किनारे पहुँचा, उस वक्त वहाँ दो वेपारी बैठे थे, उनने देखते उस सन्दूक को इस शर्त के साथ बाहर निकाल ली कि इसमें से जो मिले बराबर बाँट लेंगे, उसे खोलने पर अन्दर एक बच्चा और एक बच्ची कल्लोल करते नजर

आप, एक ने पुत्र और एक ने पुत्री ले ली, उनका अच्छी तरह पालन पोषण होने लगा, दोनों ही शिशुवय समाप्त कर युवा अवस्था में दाखिल हुए, उनका समान नाम, सदृश गुण रूप और लक्षण देख कर तथा परस्पर लीन स्नेह जानकर उन माहूकारों ने उनको विवाह कर दिया वे दोनों बड़े आनन्द से रहने लगे।

एक दिन व दम्पति चौपड़ पासा खेल रहे थे, उस वक्त कुवेरदत्त के हाथ से अंगूठी निकल पड़ी, कुबेर दत्ता ने अपनी अंगूठी से उसका मिलान किया, एकाकार व समान नामवाली देखकर विस्मय को प्राप्त हुई और यह अनुमान लगाया कि बेशक हम दोनों महोदर भाई बहन हो सकते हैं, इस ही तरह कुवेरदत्त का भी खयाल हुवा, इससे दोनों आत्माएँ प्रस्तुत अनर्थ का भारी पश्चाताप करने लगे और शंका निवारण के लिए अपने मां बाप के पास जा पहुँचे, माताओं ने अपनी अज्ञानता बताई, पिताओं से सब हाल रोशन हुए, बड़ा भारी खेद हुवा, अब उनकी इस प्रकार परिस्थिति बनी

कुवेरदत्त से जनता में होती हुई यह बात सुनी न गई कि बहिन के साथ भाई ने सादी की और पत्नि की तरह उसे सेवन की, व्यापार के बाहने पिताजी की

आज्ञा प्राप्त कर और बहन से सलाह मशवीरा कर परदेश के लिए रवाना हो गया, योगानुयोग से अपनी जन्म भूमि (Birth Place) मथुरा में पहुँच गया, व्यापार करता हुआ आनन्द से रहता है।

एक दिन कुबेरदत्त शृंगारों से सज्जित अपनी अज्ञात माता कुबेर सेना को देखकर काम विह्वल हो गया, इससे बहुत सा द्रव्य देकर अपनी स्त्री बनाली, उसके साथ भोग विलास करता हुआ लीला लहर में रहने लगा, उसके एक पुत्र उत्पन्न हो गया।

उधर वह कुबेरदत्ता अपने जन्म को तिरस्कृत समझती हुई मानव भव को कृतार्थ करने के हेतु अपने माता पिता की आज्ञा लेकर एक विदुषी महत्तरा आर्या के पास भवोद्धारिणी दीक्षा अंगीकार करली, उग्र तपस्या से थोड़े ही काल में कर्म पटल को दूर कर तेजोमय अवधि ज्ञान संप्राप्त किया, उससे उसने मालूम किया कि मेरा सहोदर भाई अज्ञानवश अपनी माता कुबेर सेना के साथ विषय सुख भोगता हुआ आनन्द मनाता है अतः उसका उद्धार करना आवश्यक है।

गुरुवर्या से आज्ञा लेकर पाँच चार आर्याओं के साथ विहार कर दिया, क्रमशः मथुरा नगरी में पहुँच कर वेश्या के स्थान पर गई, वहाँ रहने के लिए स्थान (मकान) की याचना की, उसने कहा—मैं वेश्या हूँ। सदा से नीच कर्म करती चली आती हूँ पर कितनेक समय से एक भर्तार के सहयोग से मैं एक कुलीन सी बन गई हूँ, अतः आप मेरे निकट मकान में ठहरिये और हमें सदाचार का उपदेश देकर हमारा उद्धार कीजिये, यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है, आर्याजी ने स्वीकार कर उसके मकान में उतारा कर दिया।

अब वह वेश्या साध्वीशिरोमणी के पास निरन्तर आने लगी, उस लड़के को महासती के सामने लेटा दिया करती, वह बाल क्रीड़ा किया करता और वेश्या धर्मोपदेश सुना करती—एक दिन वह लड़का बड़े रूप से खेल रहा था, तब अवसरज्ञा साध्वीरत्न ने अति सुन्दर काल जान कर इस प्रकार बालक को कहने लगी हे सुन्दर शिशो! तेरे पर मुझे बड़ा प्रेम आता है, चूँकि तेरे मेरे अनेक संबंध रहे हुवे हैं सुन अब मैं कहती हूँ.— कहीं ऐसा भी उल्लेख है कि वह लड़का झूले में हुवा क्रीड़ा कर रहा था, उस वक्त हालरिया

(को प्रसन्न करने का एक सरस गायन) के तोर पर आर्याजी ने अपने नाते प्रकट किये ।

भाई काका पुत्र तू, पोता देवर जान ॥
सुनरे भतीजे लाड़ले, नाते कहूँ बखान ॥ १ ॥

हे बालक ! इतना ही नहीं, किन्तु तेरी माता के साथ भी मेरे छः रिस्ते है—

सास बहु दादी लगे, माता भावज जान ॥
सोत हमारी होत है, नाते कहूँ बखान ॥ २ ॥

हे वत्स ! अपना सम्बध इतने में ही समाप्त नहीं होता, परन्तु तेरे पिता के साथ भी मेरे छ' रिस्ते है—

भाई पति दोनो लगे, दादो सुसरा जान ॥
पिता पुत्र हमरे लगे, नाते कहूँ बखान ॥ ३ ॥

इस तरह प्रतिदिन वह आर्यामणि उस बालक को सरस गायन में नाते सुनाया करती है, एक दिन उस वेश्या नें अपने पति को सब हाल कह सुनाया, कुबेरदत्त ने कहा-अच्छा, कल मैं ---- (Secretly) से श्रवण

कर इसका निर्णय करूँगा, तू रोजाना के मुताबिक कर को लेकर जाना।

अब यह दोनों दम्पति आश्चर्य समुद्र में गोता ला रहे हैं और यह इन्तजार कर रहे हैं कि कब सूर्योदय हो और हम इस कलंक से मुक्त हों, चिन्ता और निद्रा का सहयोग हो जाने से रजनी का साधारण काल कितना ही लम्बा प्रतीत होने लगा; यह तो प्रकट है कि जब आदमी किसी दुःख से दुःखी होता है, तो उसको स्वल्प काल बिताना भी भारी मुश्किल होता है और किसी कदर उनने रात पूरी की।

दूसरे दिन आफताब के रोशन होते ही वह वेश्या अपने लड़के को लेकर नियम पूर्वक आर्याजी के स्थान पर पहुंची, इधर वह कुबेरदत्त भी किसी पोशीदा जगह पर जा खड़ा हुआ, बस लेटे हुवे बच्चे को वह महासती उसही तरह हालरिया सुनाने लगी, सुनते ही कुबेरदत्त बाहर आकर लाल पीला होता हुआ साध्वीरत्न को इस प्रकार कहने लगा—

हे आर्ये! आप इस कदर निर्मूल-अघटित और अयुक्त मिथ्या कलंक से हमें क्यों कलंकित करती हो?

५ तुम पुत्र हो और यह तुम्हारा लड़का है, जिससे यह लड़का मेरा पौत्र (पोता) हुआ—४ तुम मेरे पति थे और यह तुम्हारा छोटा भाई है, इससे यह बालक मेरा देवर हुआ—६ अपन दोनों इस वेश्या से पैदा हुए और यह तुम्हारा लड़का है, इसलिए यह बालक मेरा भतीजा होता है।

वेश्या और व्यापारी स्तब्ध हो गये और अन्य नाते जानने की प्रतीक्षा करने लगे, इतने ही में महासती ने आगे कहना शुरू किया—

(वेश्या के साथ छः नाते)

१ तुम मेरे पति थे और यह तुम्हारी माता है, अतः यह वेश्या मेरी सास होती है-२ यह मेरी सपत्नी है और इस ही के तुम लड़के होने से मेरे सौतेले पुत्र होते हो और यह तुम्हारी पत्नी होने से मेरे पुत्र वधू (बहू) हुई-३ तुम मेरे पिता होते हो और यह तुम्हारी माता है, अतः यह वेश्या मेरी दादी हुई ४ यह मेरी जन्म दात्री है, वास्ते मेरी माता हुई—५ तुम मेरे सहोदर भाई हो और यह तुम्हारी स्त्री है, जिससे मेरी भावज (भौजाई) हुई—६ तुमने मुझ से विवाह किया और इस वेश्या को स्त्री कायम की, इससे यह मेरी सौत हुई।

यह सुन कर दोनों व्यक्तियों के मानों जमीन पर पैर चिपक गये और शेष छः नाते सुनने की भारी तमन्ना जागी, इतने में ही महादेवी बोली—

(सेठ के साथ छ: नाते)

१ अपन दोनों एक जननी से जन्मे, इससे मेरे भाई हुए। २ तुम्हारा मेरा विवाह हुवा, इससे मेरे शाही (पति) हुवे। ३. तुम्हारा लड़का मेरे कारा होता है और तुम उसके पिता हो; अतः मेरे दादा हुवे। ४ यह वेश्या मेरी सास है और तुम उसके पति हो, वास्ते मेरे स्वसुर (सुसरा) हुवे। ५. मैं इस गणिका की लड़की हूं और तुम इसके पति हो, वास्ते मेरे पिता हुवे। ६ मैं और वेश्या परस्पर सौतें है और तुम इसके पति हो, लिहाजा मेरे सौतेले पुत्र हुए।

यह सुन कर दोनों के जीवन में सन्नाटा खेल गया, बोलने योग्य न रहे, लज्जा से मस्तक नीचे झुक गये- एक भव में तीन जीवों के अठारह नाते सचमुच ही दुर्व्यवहार की चरम सीमा है-समय की अनुकूलता देख महासती ने इस प्रकार बोध दिया—

अनित्यानि शरीराणि । विभवो नैव शाश्वत ।
नित्य सन्निहित कालः स्तस्माद्धर्म समाचरेत् ।१।

भावार्थ—शरीर अनित्य है, सदा नहीं रह सकता वैभव शाश्वत कायम नहीं रह सकता यानी धन धान्य कुटुम्बादि विनश्वर हैं, काल हमेशा हरण करता है, अर्थात् मृत्यु निरन्तर नजदीक आती है इसलिये धर्म की आचरणा करो, यानी धर्म की आराधना करो।

व्याख्या-यह शरीर नाशवान है, चाहे जितनी इसकी हिफाजत की जाय या श्रृंगारा जाय-खिलाया पिलाया जाय, हिलाया घुलाया जाय, चोला पचोला जाय, वस्त्राभूषणों से सजाया जाय, और फूल रुई के पेल में आराम से पाला जाय, तब भी यह समय पर ढीला बनकर काम नहीं देता, व्रत-यम-नियम तपस्या और त्याग के समय खिसक जाता है, सेवा करना तो मानो इस पर वज्रपात होता है, सुस्त बैठकर खाना पीना, फिरना डोलना ही इसे रुचिकर है, अतः मनुष्य को चाहिये कि इससे सेवा कार्य और तपादि कर्म अवश्य कराये जाय, इस ही तरह वैभव भी नश्वर है धन,

धान्य, मकान, हाट, हवेली, जमीन, जायदाद आदि स्थावर मिल्कियत और स्त्री, पुत्र पौत्रादि परिवार, सगे, सम्बन्धी, ज्ञातीय, गोत्रीय, मित्र प्रेमी और इतर सब जगम मिल्कियत नाशवन्त है, इससे मोह कम कर इनका सदुपयोग करना चाहिये. वर्ना क्रमश इन सबका नाश हो जाना है, ऐसे लाखों दृष्टान्त बाचे हुए, सुने हुए, और नजरों में गुजरे हुए महसूस होते हैं, इधर काल कराल निरन्तर मुख पसारे हुये खड़ा है और प्रति क्षण यह प्रतीक्षा कर रहा है कि इसे कब चबा जाऊं, मतलब कि दिन ब दिन उम्र कम होता जाती है, इसलिये धर्म का आराधन करो, सच्चा सहायक और रक्षक एक मात्र धर्म ही है, वह धर्म अहिंसामय, सयमयुक्त और तपस्या सहित हो, यही धर्म ससार का तारक धर्म है, इसे विचार वाणी और वर्तन से अपना कर श्रेय मार्ग पर विचरो।

अहो सेठ! तुच्छ वासना के कारण तुम लोगों से कितना अनर्थ हुआ है! इसे सोचो समझो और अपना उद्धार करो-यह सब सुनकर सेठ और वेश्या के नेत्रों में से अविरल धारा आसू बहने लगे और दीनमुख होकर इस तरह खड़े रहे यानी उद्धार मार्ग की भिक्षा माग रहे हैं।

सुकाज को छोड़ कुकाज करे।
धन जात है व्यर्थ सदा तिनको ॥
एक राड बुलाय नचावत है।
नहीं आवत लाज जरा उनको ॥१॥
मृदंग कहे धिक है धिक है।
सुरताल पूछे किनको किनको ॥
तब उत्तर राड बतावत है।
धिक है इनको इनको इनको ॥ २ ॥

देखिये इस कुत्सित कर्म के लिये जीवाजीव दोनों धिक्कारते हैं, अब तो शायद दर्शकों को जरूर शर्म आयगी-आप यदि वेश्यागामी हैं, या नृत्य देखने के शौकीन हैं तो उपर की परिस्थिति पर पूरा विचार करें और आज ही प्रभु की साक्षी से प्रतिज्ञा करलें, जिससे आपकी निरन्तर उन्नति होगी।

—×—×—

* पाँचवाँ व्यसन शिकार *

किसी पशु पक्षी या जलचर प्राणी को बन्दूक, नमचा, भाला, तीर किंवा गोफनादि शस्त्रों से क्रीडा के खातिर या कौतुक के लिए या मांस भक्षण के वास्ते अथवा अन्य ऐसे ही कारणों को लेकर मारना 'शिकार' (Hunting) या शिकार खेलना कहा जाता है।

बेचारे निरपराधी सिंह-नाहर चिते-हरीन खरगोश सियाल रीछादि जानवरों का तथा कबूतर मोर पपैया चकवा सुआ आदि पक्षियों का एवं मगरमच्छ मछलियें-काछवा मेंडक और जलोकादि जलचर जीवों का पापी शिकारी शिकार करते हैं, ये लोग उसमें अपने को बहादुर समझते हैं पर उनको यह पता नहीं है कि ऐसा काम तो कोला, भील, घांची, मोची आदि भी कर सकते हैं, तो फिर सब बराबर बहादुर हुवे ? अनेक लोगों की सहायता लेकर यहां आदमी अपनी बहादुरी बताने में जरा भी शरमाता नहीं है, यह शर्म की बात है।

अहिंसा के उपासक हिन्दु मुसलमीन और क्रिश्चिन भाइयों से मैं पूछता हूं कि आप ईश्वर, खुदा या ईसा

मर जीव में मानते हैं ता फिर यह स्पष्ट हो है कि ईश्वर ईश्वर का, खुदा-खुदा का और ईसा-ईसा को मारता है क्या यह न्याय सगत है ? अपन स्वार्थ क खातिर, कुतुहल और कल्लोल क कारण पशु आदि का शिकार करना घोर अन्याय है, यह ता नाह का दोजख नरक (Hail) के बन्द दरवाजों को खोलना है।

हिंसक लोगों की यह एक बडो विचित्र दलील है कि हिंसक और जहरी जानवर मनुष्यों को कष्ट पहुँचात हैं, अत उन्हे मार देना पुण्य में शुमार है, क्योंकि उनको मार देने से लाग निर्भय हो जायगे और आराम से रहने लगेंगे-उत्तर में निवेदन है कि अव्वल तो वे मद्दकारण बिना (अपनी रक्षा क सिवा) किसी को सताते ही नहीं हैं—सिंह-चितादि जब आफत में फँस जाते हैं तब मनुष्यों पर झपटत हैं, नहीं ता अपने रास्ते रास्ते चले जाते हैं, तथा सप बिच्छू आदि जब स्वय कहीं दब जाते हैं या कष्टाभिभूत हा जाते हैं तब डक मारत हैं, नहीं ता पानी के प्रवाह की तरह चले जाते हैं, इस उपरान्त भी थोडी देर के लिये मान लीजिये कि काई बिना ही कारण अपने को हरकत करते हैं तो क्या उनको मार देने से वैसे जानवरों से ससार खाली हो जायगा ? और इससे

विश्व में शांति हो जायगी क्या ? बन्धुओ ! ऐसा कभी न होगा, उनका कर्त्तव्य वे करते रहें, हमारा रक्षण करना हमें करना चाहिये।

छोटे शिकारी तो मच्छर, मक्खी, खटमल, पिस्सू, डांस, जवा और जूँ लीख की भी शिकार अंगुलियों से कर डालते हैं, उनका कथन है कि ये मनुष्यों को दिन रात तकलीफ पहुँचाते हैं, इनको मार देने से पुण्य होता है और आदमियों की तकलीफें रफा हो जाती हैं- यह मान्यता सचमुच ही अज्ञान दशा की एक जाहिरात है, कारण कि जिनका खुराक ही मात्र मनुष्यों के शरीर हैं, उसमें उनका क्या गुनाह है ? उनका स्वभाव ही ऐसा है। तो अपनी रक्षा के लिये अन्य उपाय करना चाहिए, पर उनको मार कर एक अनार्य कर्तव्य का परिचय न देना चाहिये।

जैन और हिन्दू तो क्या पर मुसलमीन धर्म भी अहिंसा का पुजारी है, हिंसा में पाप मानता है और उस को रोकने का आदेश करता है देखिये—

सुना जाता है कि हजरत
दयालु थे कि कोई उनके तमाचा मा
दूसरा गाल उसकी तरफ कर देते, पे
हिंसा का उपदेश दे सकते हैं ? कदापि

मौलाना हुसनयीन अलीनल-एक
यजनामून हमें यकीन दिलाते हैं कि वे
थे। उनका कथन है कि खुदा ताला की था

(१) अगर तू दूसरे जानवरों पर रहम
तो तेरे पर मेरी रहम नजर होगी।

(२) अपने बदन को रहम-दया की पोशाक
खूबसूरत बनाने की जरूरत है।



(६) अपने आधीनों की हर हमेशां फिक्र रखना चाहिये, जिनको दिल दुःख-दर्द और अफसोस से पीड़ित हों, उन पर दया भाव अवश्य रहना चाहिये।

(७) अगर तू दूसरे पर क्षमा करेगा तो तुझको भी क्षमा की जायगी; जिससे तेरे लिये अदृश्य स्थान मोक्ष का दरवाजा खुला हो जायगा।

अगर मेरी रहम की तुझे चाहना हो तो तू दूसरे पर रहम नजर रख। मुसलमानों में जो बड़े बड़े आलिम फाजिल हो गये है, उनने भी दया को अपनाया है, उन ने अपनी कविताओं में अच्छा प्रकाश डाला है :—

❀ इस्लामी मजहब के फरमान ❀

इस्लामी मजहब फरमावे।
चींटी को नहीं मारो॥
दतुवन छिल नित हरेवृक्ष की।
डाली को न विदारो॥१॥
रोजे अरू रमजान ईद दिन।
दारू मांस स्त्री मोचत॥

सच्चे दास कभी नही सेवत ।
हराम गिनी ज्यागत ॥ २ ॥
पैगम्बर साहब का हुक्म है ।
रहम रक्खो सब जो पर ॥
रहम मवी सा हो रहीमान ।
रब मालिक, गरीबपरवर ॥ ३ ॥
पीर आलिय जो जा हुये हैं ।
वे सब आमिष त्यागी ॥
सब प्रकार को कुरबानो का ।
हुक्म दया करत सुभागी ॥ ४ ॥
साहब हजरत अली नजीफे ।
मिसरा कहते हैं आ नर ॥
पशु पन्नी क पेट बीच म ।
कभी कबर न करो ॥ ५ ॥
मुबारक गिन शिकार को अन्दर ।
रहम हिरनो पर लाया ॥
अल्लाह ने उसे उसी रहम से ।
बादशाह बन पाया ॥ ६ ॥
धर्म शास्त्र में बहु तेरे हैं ।
तिसे वचन तथापि ॥

ये रहम दिल करके कोई ।
मारत जीव अधापि ॥ ७ ॥
कवि कहत है सुनिये गुनिजन ।
धर्म वचन सरधह कर ॥
कुल जीवा का जान बचाओ ।
रहम हमेशा रख कर ॥ ८ ॥



रहम जो करता है बदला, रहम का वह पायगा ।
जुल्म करता है तो बदला, जुल्म का मिल जायगा ॥
रहम जालिम पर करै गर पाक रब्बुल आलामीन ।
जुल्म फिर मजलूम के हक मे बुरा होजायगा रहम०॥१॥
बक्श दे अपना गुन्हा हक पर, नहीं हक्कुल इबाद ।
यह कहा किसने तुझे जालीम भी बक्शा जायगा ॥
माफ तो बाहमे करें हक, शीकसा जुल्म न आजीम ।
हकमगर बन्दों का वह, बख्शें तो बख्शा जायगा रहम०॥२
जुल्म का ताजीर राह साको जमा राह सान है ।
पेड़ बबुलों के बोकर, आम क्यों कर खायगा ॥
नकी पे मजलूम कु जालिम, कि दे दावर जरर ।
सब गुनाह मजलूम हक, जालिम के सर उठायगा रहम

शीखता है देख कर क्यूं, गैर की यह चाल तू।
चोर चोरी गो करो, तो एक दिन पकड़ा जायगा॥
अहले दिल है ना किसी को, तू दिल आजारी न कर।
याद रख मेरी नसीहत, वरना तू पछतायगा रहम०
माला जरके जोर पर ये, निखवतों की यरोमनी।
पर ये मुल्कों माल सब इस जा पड़ा रह जायगा॥
इल्म पढ़कर मोलवी, जुल्मों दगा जाइज किया।
क्या तेरे कुवे किताबों मे, खुदा छ। जायगा रहम०॥३
सांप बिच्छु की हिफाजत, ये गुनाह इन्शान को।
जहर खिला वाता है यह, झूठ धर्म कह लायगा॥
हैं मियां मजलूम करले, हक अदा इन्सानियत।
क्या दरिंदों को नसीहत, का असर हो जायगा रहम०॥



जुल्म करना छोड दे। जालीम खुदा के वास्ते॥
है यह हरकत ना रवा। अहले वफा के वास्ते जुल्म॥१॥
है बनाए सब उसी के। जिसने तुझे पेदा किया॥
क्यों सताता है किसी को। दादिनों के वास्ते जुल्म॥२॥
होगी खुद गरजी भला इससे भी बढ़कर और क्या॥

जान लेना और का। अपने मज़ा के वास्ते जुल्म ॥३॥
काट कर औरों की गरदन। खैर अपनी मांगता ॥
दे जगह इन्साफ को। दिल में खुदा के वास्ते जुल्म ॥४॥
चन्द रोजा जिन्दगी तन। है यह पानी का बुलबुला ॥
नामाग वाह बनता है क्यों? मुजरीम सजा के वास्ते जु०
कर भला होगा भला। नेकी का बदला नेक है ॥
मत सता हरगीज किसी को। हाजत रफा के वास्ते जु०
कर अदा अपने फरायज। होने वाली शाम है ॥
मत मरे मरदूद क्यों? नाजो अदा के वास्ते जु०॥७॥
भूल कर मालिक को फिरता। दर बदर बलदेव क्यों ॥
जान देता बेहया वस्ले बुता के वास्ते जुल्म ॥८॥



जुल्म कर करके जलीलों को जलाते न चलो।
छूरी गर्दन पै गरीबों के चलाते न चलो ॥
नहीं रहने का हमेशा है यह हुस्ने दरिया।
बदी की बाज से बहुतों को बहाते न चलो ॥१॥
दौर दौरा सदा रहना न किसी का साहब।
सितम समशेर से आलम को सताते न चलो ॥२॥

चन्द रोजा है इस दुनिया में जिन्दगी जिस पर।
निशाने की का जमाने में मिटाते न चलो ॥
खुदा का खौफ करो कुछ भी तो दिल में यारो।
इश्क स खाक में बन्दों को मिलाने न चलो ॥३॥
अल्ला मालिक ने किया आपको हुस्ने दौलत।
गजब की चाल से गरदु को हिलाते न चलो ॥
वक्त बदल जाता है कमालों ने को।
हराहिसे नफस में जिन्दगी को गवाते न चलो ॥४॥

उपर्युक्त कविताएँ से आपको बोध होगया होगा कि मुहम्मदन धर्म में दया का कितना ऊँचा स्थान है, आशा है मुसलमान भाई और अन्य जनता इस पर गौर कर अहिंसा के भक्त बनकर उससे लाभ उठावें

इतना ही नहीं इंग्लिस्तान में निवास करने वाले लोगों ने भी जीवदया को अच्छे ढंग से स्वीकार की है, यद्यपि वे अधिक तर हिंसक हैं, तदपि उनमें कई समझदार लोग बड़े धर्मनिष्ठ हैं, उनके सद् विचारों की द्योतक लॉंगफैलो की निर्मित निम्नाङ्कित एक कविता पढ़िये—

Turn turn thy hasty foot aside
Nor crush that helpless worm
The frame thy scornfull thoughts deride
From God received its form (1)
The common lord of all that move
From whom thy being flowed
A portion of his boundless love
On that poor worm be stowed (2)
The sun the moon the star he made
To all his creatures free
And spread over earth the grassy blade
For worm as well as thee (3)
Let them enjoy their little day
Their humble bless receive
Oh! do not lightly takeaway
The life thou caust, not give (4)

(Long fellow)

भावार्थ—ऐ चलने वाले ! तेरा फुरतिला पेर एक तरफ हटा, उस असहायक कीड़े को न कुचल, जिस शकल पर तेरे घृणित ख्याल होते हैं, वह शकल भी पर

मात्मा से प्राप्त हुई है। १ तमाम प्राणियों का स्वामी (परमात्मा) जिससे कि तेरी आत्मा भी हुई है, उसने अपने अपार प्यार का हिस्सा उस बेचारे कीड़े को भी दिया है। उसने सूर्य, चन्द्र और तारे बनाये हैं और अपने तमाम प्राणियों को आज्ञा दिये हैं तथा पृथ्वी पर हरी सब्जी फैलाई है, कारण कि उसके लिए तू और कीड़ा बराबर है। वे उन बेचारों का उनके थोड़े से दिन आनन्द पूर्वक बसर करने दे, और उनका थोड़ा सुख इन्हें प्राप्त करने दे, अरे! जो जिस जान को तू नहीं दे सकता, उसे सहज ही मत ले। ४

(लौंग फैलो)

इस पोयट्री से यह सिद्ध होता है कि युरोपियन भी कितने दयालु होते हैं क्या क्रिश्चिन भाई इससे बोध पाठ शीख कर हिंसा का त्याग करेंगे? आशा की जाती है कि जरूर अहिंसक बनेंगे।

सगर्भा हिरणी के शिकार के महत्पाप के कारण मगधाधीश्वर महाराजा श्रेणिक को नरक में जाना पड़ा, यद्यपि वे पीछे से बड़े धर्मात्मा हो गए थे फिर भी कृत पाप भोगने के लिए एक बार जाना पड़ा, तो क्या कर्म

राज अन्य हिंसक शिकारियों का छोड़ देगा ? हरगीज नहीं ! हिंसा से मुक्त प्राणी दैविक सुख को प्राप्त करते हैं। कहा गया है कि—

सर्व हिंसा निवृत्ता ये। ये च सर्व सहा नरा ॥
सर्वस्याश्रय भूताश्च। ते नरा' स्वर्गगामिन' ॥१॥

भावार्थ—जो मानव सर्व हिंसा से मुक्त हैं और सर्व सहन करने वाले हैं तथा सर्व के आधार भूत हैं, वे मनुष्य स्वर्गगामी हैं।

बस तो निश्चय हुआ कि "आत्मवत् सर्वभूतेषु य' पश्यति स पंडित." अर्थात् तमाम आत्माओं में अपनी आत्मा के तुल्य जो देखता है वह पंडित है; अर्थापत्ति न्याय से शेषामूर्खारिति, बाकी के सब मूर्ख हैं, यह अर्थ सिद्ध होता है।

इसको समझने के लिए सबसे सरल न्याय यह है कि अपने कोई चपेटा चढ़ादे या हन्टरों से पीटे वा प्राण लेले तो कितना कष्ट होता है, बस ठीक उसी तरह प्रत्येक

प्राणी को होता है, इसलिए शिकारादि किसी तरह की हिंसा का सर्वथा त्याग होना चाहिए। महात्मा गान्धी के जमाने में अहिंसा का युद्ध भारत में भारी जोरों से चल रहा है, उसके अन्तस्थल में एक अनोखा प्रकाश है, जिसको जानने वाले स्वल्प संख्या में हैं। अहिंसा का पूर्ण दावा करने वाले जैन भाई और इतर अहिंसक धर्म के उपासक किस स्थल पर खड़े हैं, इसे जरा सोचें समझें और देश की अहिंसक सेवा में जुट जाय यह प्रेच्छनीय हैं।

ऊपर के सारे प्लाट को बाँचने से आपको मालूम हो गया होगा कि शिकार खेलना कितना घातक व्यसन है, दयादेवी का साम्राज्य समूल नष्ट करने वाला है, अतः धार्मिक नैतिक और शिष्ट परंपरा से भी यह सम्पूर्णतः त्याज्य है, आप यदि शिकारी हों तो परमात्मा की साक्षी से आज ही शिकार खेलना त्याग कर अपना कल्याण करें और अन्य को समझा कर त्याग कराने में प्रयत्नशील बनें।

———

❀ छट्ठा व्यसन चोरी ❀

डाका डाल कर, खात पाड कर, खीसा काट कर, गांठ छोड कर, उठाईगिरी, से, देखते या पोशीदा आदि तरीकों से अल्प मूल्य या बहुमूल्य जीवधारी वा अजीव वस्तु मालिक की आज्ञा बिना ले लेना 'चोरी' (Theft) कही जाती है।

चोर लोग यह समझते होंगे कि मुफ्त का माल ला कर मौज मजा उडावेंगे और शायद ऐसा करते होंगे, पर मालूम होने ही सतर्क पुलिस उसके पीछे घूमा करती है और आखिर पता लगा कर उसे हिरासत में ले लेती है, कोर्ट में धर देती है, मुकदमा चलता है और उसे छः मास, वर्ष भर, या दो पांच वर्ष जेल में बन्द कर दिया जाता है, वहा उससे पानी खींचने का, बाग साफ करने का, लकडी काटने का, गट्टी फोडने का, सडक कूटने का चक्की चलाने का, बोझा उठाने का और ऐसे अनेक कठिन काम कराए जाते है, और वक्कन-फक्कन नंते लगाई जाती है, पैरों में सांकलवाली या छडेवाली

बेड़ियाँ पहनाई हुई होने से भाग नहीं सकता, दौड़ नहीं सकता, जल्दी और आराम से चल नहीं सकता, वह वहाँ बड़े कष्ट से दिन गुजारता है, उस वक्त सम्भवत यह सोचता होगा कि अब ऐसा कभी न करूंगा, पर जेल से छुटने के बाद फिर वही बात, इस तरह निन्दनीय जीवन वह पूरा करता है।

चोरी का माल घर में रह नहीं सकता, भयभीत होने से आराम भी नहीं पा सकता, और आखिर किसी तरह चोरी का माल होली की तरह नाश हो जाता है।

चोरी कर होरी धरो। भई छिनक में छार।
तुलसी माल हराम को। जात न लागे बार॥१॥

चोरी करने वाला चोर, उसका सलाहकार, सहायक और चोरी का माल मोल लेने वाला या सम्भालने वाला, सब गुन्हेगार होते हैं, उन सबों को सजा होती है, सब पाप की आचरणा करने वाले पापी समझे जाते जाते हैं-धन, वस्त्र, जेवर, सुवर्ण, रजत, बरतन, बिस्तर, लकड़ी, छत्ता, जूता, कागज, कलम, पुस्तक, शाक,

भाजी, फल फूल, अनाज, दूध, दही, घी, गुड, शक्कर, आटा, दाल आदि समस्त अजीव पदार्थ और बालक, स्त्री, ऊट, घोडा, हाथी गाय, भैंस, बकरी, कुत्ता, तोता, कबूतर, मैना, दास, दासी इत्यादि समग्र जीव पदार्थो की छोटी या बडी किसी किस्म की चोरी इज्जत को बिगाडने वाली है, पाणिशन नाश करने वाली है, जेल म पहुँचाने वाली है और कठिन यातनाएँ देने वाली है, अन्तिम दुर्गति को पहुँचाने वाली होती है।

यों तो ससार भर में आजन्म चोरी से कोइ नहीं बचा होगा, ऐसा प्रतीत होता है और वाक ऐसा हो सकता है, इस पर एक सुन्दर दृष्टान्त दिखाते हैं—

किसी एक नगर के राजा ने चारी के अपराध में एक चोर को फाँसी का हुक्म दे दिया, समय के पहिले चोर को पूछा गया तुम क्या चाहते हो ? उसने कहा— श्री दरबार के दर्शन करने की अभिलाषा है, सेवकों ने आज्ञा प्राप्त कर उसे राजा क पास पहुँचा दिया—इस वक्त कइयों ने खयाल किया होगा कि यह मांफी मांगेगा,

लाचारी करेगा, खुशामद करेगा, दया की भिक्षा मांगेगा, पर ऐसा कुछ न हुवा-राजा ने पूछा क्या चाहता है ? उसने कहा –हुजूर ! मैं अपने अपकृत्यों से मरता हू, इसका तो मुझे कुछ दु ख नहीं है, परन्तु मरते दम दिल में मात्र एक खटका रह जाता है, वह यह कि—सोना उत्पन्न करने की खेती मैं जानता हूँ, मैं चाहता हूं कि किसी को शिखला कर मरूं तो ठीक है, यह बात सुनकर राजा खुश-खुश हो गया, और फरमाया कि यह खेती मुझे शिखा दे, उसने कहा—जमीन विदारण कराकर नवीन खेत तैयार कराईये और खास मिट्टी डाल कर कम्पनीट (पूरा) कराईये, फिर उसमें सुवर्ण वेल के बीज बोए जायगे उससे मनोहर सोना पैदा हो जायगा। राजा ने फाँसी का हुक्म स्थगित (Postpone) किया, और तैयारी करने की आज्ञा दी, धमधाकार काम चला, खेत तैयार हो गये। राजा, प्रधान मण्डल, सेनापति, कर्मचारी सेठ, साहुकार और प्रजाजन के अगणित लाग उस नवीन खेतों के सामने विशाल मैदान में पहुँचे, चोर भी वहाँ पहुँच गया, देखिये अब वहाँ क्या मज़ा आता है–

चोर सबके बीच में खड़ा हो गया, हजारों आँखें उसको निहारने लगीं, उसने अपने खीसे में से बीज निकाले, हथेली में लेकर बड़े गौर से देखने लगा, महीन महीन काले बीज थे, जंगली घास के बीजों की तरह नजर आते थे, मुट्ठी बंदकर फिर खोली, इस तरह तीन चार किया, आखिर राजा साहब ने पूछा—क्या सोच रहा है ! उसने कहा—मेरे नसीब को रो रहा हूं, नृपेन्द्र ने कहा—क्या बात है ? बड़ी महनत से मैंने यह विद्या सीखी, परन्तु मैं चोरी करता हूँ इससे ये बीज मेरे बोए हुए उग नहीं सकते, जिसने कभी चोरी न की हो वह बो दे तो सोना ही सोना हो जायगा, चारों तरफ निगाह डाली, पर कोई हिम्मत करके आगे न बढ़ा, वहाँ बड़े बड़े आदमियों को पूछा गया, मगर किसी की हिम्मत न हुई, आखिर लाचार होकर चोर ने नरेश को कहा—हजूर अब तो आप श्री को ही बीज बोना पड़ेगा, राजा सा० ने सोचा "छोटी-छोटी चोरियाँ तो मुझ से भी बनी हैं" और कह दिया भाई ! मैं नहीं बो सकता, चोरी से मुक्त मैं भी नहीं हूं, चोर ने निवेदन किया—

महाराज ये हमारी लोग चोर हैं, इनको कुछ सजा नहीं और मुझको फाँसी की आज्ञा ? राजा सा० निरुत्तर हो गये और उसको फाँसी की सजा माफ कर दी।

इससे यह साबित हुआ कि संसार में सब चोर हैं, पर यहाँ उस चोरी का निषेध किया जाता है जिससे राज दण्डे और लोग भण्डे यानी राजा सजा दे और लोग निन्दा करें।

साहित्य चोरी भी एक जबर चोरी है, दूसरे की बनाई हुई वस्तु पर अपना या दूसरे का नाम लगा देना, लेखों को चुरा कर दूसरे नाम लिखा देना, कम और बुद्धि हीन, नामवरी का लोलुप तो यह काम करता ही है, पर त्यागी नाम धरने वाले साधुजन भी ऐसा कुकृत्य करते नजर आते हैं।

चोरी करने वाला चोर हिंसक-व्यभिचारी-पातकी और निर्दयादि अनेक दुष्ट कर्म करने लग जाता है, पशु हत्या, बालहत्या, स्त्रीहत्या, राजहत्या, ऋषिहत्यादि सब निःसंकोच करने लगता है, दया और ब्रह्मचर्य को

मानो उसके जीवन में से ही समूल नष्ट होगये मालूम होते हैं।

चोर लोग कदाचित यह समझते हों कि चोरी के धन म स थोडा धन सुकृत में लगाकर पापों से मुक्त हो जायगे, मगर ऐसा कभी न हो सकेगा, दकीला अनाज जिस तरह अडान में नहीं उग सकता, उस तरह चोरी का अन्याई पैसा धर्म क्षेत्र में नहीं उग सकता,यानी फल-प्रद नहीं हो सकता।

-मा-बाप की लापरवाही से बचपन में ही बच्चे चोरी करना शीख जाते है, घर में पैसा-वस्त्र-पात्र-अनाजादि चुरा कर ले जाते हैं, मां बापों को मालूम हो जाने पर या किसी की शिकायत पर 'बच्चा है बच्चा' यह कह कर टाल देते हैं, इससे परिणाम यह आता है कि बड़ा होने पर दूसरों के वहाँ चोरी करता है और समय पर एक बड़ा डाकू बन कर डाका डालता हैं; इस-लिये माँ बापों को चाहिए कि वे बच्चों को पहिले से कब्ज में रक्खें।

चोरों को यह सदा सन्देह बना रहता है कि किसी

दिन में अवश्य पकड़ा जाउगा और बड़ी दुर्दशा होगी, इससे खाना पीना पहनना ओढ़ना में जरा भी लुत्फ नहीं आता, रात दिन खटका धड़कता रहता है, चित्त पर ग्लानी रहती है, और ध्यान में वही होता है, इससे भारी परेशानी उठानी पड़ती है।

धर्म शास्त्र में पैसे को प्राण का प्रतीक समझ कर ग्यारहवाँ प्राण मान लिया है कि प्राणों के नाश से जो दुःख होता है; वही धन के अपहरण से हो जाता है, इसलिये अहिंसा वादी को चोरी का त्याग करना चाहिए।

चोरी का उत्कृष्ट त्याग करने वाला और इसके मर्म को समझने वाला महावीर शासन में एक श्रावकरत्न पोणिया श्रावक था–करीब ढाई हजार वर्ष पहिले भगवान् महावीर का परमोपासक पोणिया नाम का श्रावक निरन्तर सामायिक (समता भाव प्राप्त करने का एक धर्मानुष्ठान) किया करता था, वह दो घड़ी (४८ मिनिट) एकाग्र चित्त बन जाता था, एक दिन सामायिक में चित्त स्थिर न हुवा, बहुत प्रय न करने पर भी असफलता रही,

क्रिया से निवृत्त होकर अपनी पत्नी के पास पहुँचा, मलिन मुख देखकर उसने पूछा— आज आप उदास क्यों हैं ? उसने सामायिक अनुष्ठान बिगड़ जाने का जिक्र किया और यह कहा कि अपनी कोई भारी भूल हो गई है, परस्पर शिष्टाचार से काफी विचार किया, आखिर स्त्री ने कहा-स्वामिन ! कल मैं पड़ोसन के यहाँ अग्नि लेने गई थी, जल्दी के मारे उसही के कण्डे में आग लाकर चूल्हा सिलगाया और भोजन बनाकर आपको जीमाया, उससे गड़ बड़ हुई हो तो मैं नहीं कह सकती, पोणमिया ने कहा-बिलकुल ठीक है यही हुआ, बिना पूछे लाने का टुकड़ा लेने का तुम्हें क्या हक था ? यह चोरी हुई और सारे भोजन में उसका असर पहुंच गया तथा भोजन का असर मन पर पड़ा और इस ही से चित्त डावाडोल हो गया, प्रयत्न करने पर भी स्थिर न हुआ आइन्दा पूरा ध्यान रखना, नतमस्तक हो उसने स्वीकार किया—देखिये चोरी का मजा और उसका त्याग इसको कहते हैं।

कोई भी ज्ञानी पुरुष चोरी को अच्छा नहीं समझता,

उसमें सुख नहीं मानता, इससे नितान्त दुःख और दुर्गति ही प्राप्त होती है, यह उपर की व्याख्या स आपको ज्ञात हुवो होगा और निम्नलिखित श्लोक से भी आपको विशेष बोध होगा—

चौरो दुःखमुपैति नारकसमं मन्योऽपि तत् सन्निधे
शुष्के प्रज्वलिते हिसार्द्रमपि किं नो वन्हिना दह्यते॥
सद्योलुण्ठन सद्यदग्ध चरम ग्रामेऽग्नितप्त प्रजा।
मद्योत्पत्ति. भवेत्समं सगरजे किं किं नले भै तथा॥१॥

भावार्थ—चोरी करने वाला नारकीय दुःखको भोगता है एव उसके पास रहने वाले मनुष्य भी नरक के दुखों को भोगते हैं। जैसे सूखे काष्ट के साथ गीली लकड़ी भी जल जाती है, दुराचारी सगर के पुत्रों के मदोन्मत हो जाने पर उनकी प्रजा को भी अनेक यातनाओं का सामना करना पड़ा।

चोर लोग अपना मन मोटा करके कुछ दिन खुश-नुमा रहने लगें, पर अतिम तो यही बनता है, जो ऊपर

कहा गया है, समझदारों ने तो यह घोषणा करदी है कि भूखे मरना अच्छा, मगर चोरी करना बुरा, इस लिए इस दुष्ट व्यसन को कभी नजीक न आने दें और चोरों के सम्पर्क में भी कदापि न रहें—

यदि आप छोटी या बड़ी कोइ तरह की चोरी जाहिर या छिप कर करते हों तो उसे तत्काल त्याग दें इससे संसार में आप पर विश्वास जमेगा, और सच्ची कमाई की नीति आपके कण्ठ में वरमाला डालेगी।



❀ सातवाँ व्यसन पर स्त्री ❀

सधवा विधवा कुँवारी पासवान या नातरेल सब पर स्त्रियाँ हैं, मतलब कि पँचों की साक्षी से विवाहित निज पति को छोड़ कर इतर सब पर स्त्रियाँ में शुमार हैं इस व्यसन का मकसद परस्त्रि गमन से है, इस ही तरह स्त्री के लिये सब प्रकार के पुरुष समझ लेना।

पर स्त्री के सेवन से क्या क्या नुकसान होते हैं, वे अब क्रमशः दिखाने का प्रयत्न करते हैं—

सब से पहिले तो परस्त्री भोगी को यह समझना चाहिए कि कोई पुरुष मेरी स्त्री पर बुरी निगाह डाले या वाग्विनोद करे अथवा काम क्रीड़ा करे और मुझे मालूम हो जाय तो मैं क्या विचार करूं? क्या उपाय सोचूं?

---

† परस्त्री में मस्त मस्तानों का कहना है कि कुंवारी और विधवा परस्त्री में नहीं गिने जा सकते, चूंकि वे दोनों अविवाहिता हैं, इसलिए मात्र सधवा ही परस्त्री में गिनना चाहिये उनसे मेरा नम्र निवेदन है कि पर स्त्री का पति या स्वामी के साथ सम्बन्ध नहीं है अपनी विवाहित स्त्री के अतिरिक्त तमाम अन्य 'पर स्त्री' मानी जाती हैं।

और किस तरह प्रतिकार करूं ? बस यही सब ठीक पर-स्त्री के पति को भी होता है, मालूम होते ही वह क्रोध से तमतमा उठता है, उसके नाश का विचार करता है, नाना उपाय सोचकर उसकी मरम्मत कर देता है या प्राण लेकर ही शान्ति का दम भरता है, कितना लाभ हुवा ? समझ में आ गया ? अब आगे देखिये--

यदि आप व्यभिचारी हैं तो आपकी देवी भी व्य भिचारणी होने की सम्भावना है, वह यह सोचेगी कि मुझको छोड़कर मेरा पति अन्यत्र मोज मजा करता फिरता है तो मैं भी स्वतन्त्र हूं, अनेक जगह घूमा करूँ, मेरा पति जब पत्नीव्रत नहीं पालता है, तब मुझे पतिव्रत पालने की क्या दरकार है ? इस तरह खुद की औरत भी व्यभिचारणी बन जाती है, दोनों का खराब चाल चलन (Lose character) देखकर उनकी सन्तान भी बिगड़ जाती है, फिर क्रमशः सारा ही घराणा बिगड़ जाता है।

"कामातुराणां न भयं न लज्जा" व्यभिचारियों को भय और लज्जा नहीं होती, यह सिद्धान्त भी सोलह

आना सत्य है, कामी पुरुष काम तृप्ति के लिये कैसे भी ग्वतरनाक स्थान पर चला जाता है, मार्ग का भय उसमें जरा भी असर नहीं करता, लज्जा का दिवाला तो स्पष्ट नजर आता है, कोई जाने या देखे या कहे, या फटकारे अथवा ठोक पीट करे तो भी शर्म नहीं आती—कहा है—

शर्म को भी यहा पर, शर्म आय हैं ॥
जो वे शर्म हो, के न शर्माय हैं ॥ १ ॥

यह तो दीपक की तरह स्पष्ट है कि पर स्त्री का सेवन उच्छिष्ट (झूठा एँठा) भोजन के बराबर है, क्या आपको मालूम है कि झूठा भोजन का कौन अधिकारी है ? एँठा भोजन प्राय' चण्डाल या मगते-भिखयारी, खाया करते है, तब सोचिये कि मल मूत्रादि दुर्गंधित पदार्थों से भरी हुई उच्छिष्ट स्त्री को सेवन करने से क्या पदवी मिलनी चाहिए ? सहसा यह मुख से निकल जायगा कि 'महाचण्डाल और महा मगता; उसे कहना चाहिए, देखा जनाब ! कितनी बड़ी उपाधि से भूषित किया जाता है ।

पर स्त्री सेवन से चोरी और अन्याई दोनों दोष लगन

है, मालिक के बिना हुक्म स्त्री ग्रहण करना चोरी हुई और व्यभिचारी तो प्रत्यक्ष है ही, संसार में सब से अधिक निन्दा पात्र ये दो ही वस्तुएँ हैं—

लाज जगत में दोय बातकी, चोरी और अन्याई॥
इनकों सेवन करने वाले, केवल दुर्गति पाई॥ १॥
लाज घटे तुझ कुल तणी, घटे ताहरू ज्ञान॥
आयुष ने चेतन घटे, घटे जगत में मान॥ २॥

पर स्त्री पर राजा रावण की कथा दुनिया में मशहूर है। जैन हिन्दुओं का तो शायद बच्चा बच्चा जानता होगा, दशहरे में रावण की भारी कदर्थना की जाती है, इससे इस कथा की विशेष प्रख्याति हो गई है—

करीब ग्यारह लाख वर्ष पहिले बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनि सुव्रतस्वामी के शासन काल में राजा रावण ने न्यायशील रामचन्द्र नृपेन्द्र की सती सीता का अपहरण किया था, उसने उसे काफी समझाया था, पर उसके साथ कोइ बेजाता कार्यवाही नहीं की गई–न जबरन किया गया न कुचेष्टाएँ की गईं, यहाँ तक की

तक छुआ भी नहीं गया, तथापि पर स्त्री हरण मात्र के दोष को लेकर वाल्मीक कृत, तुलसी कृत, जैन रामायण और रामचरितादि में रावण की काफी भद्द उडाई गई है और पीछे से भी जिसके हाथ कलम चढ़ी उसने पूरी खिल्ली उड़ाई, आज तक भी रावण को मारने की प्रदर्शना आबाल गोपाल से की जाती है, दशहरे के दिन हर एक कहते हैं—'चलो रावण मारवा चालो'-पर स्त्री के अपहरण मात्र से रावण की इस कदर दुर्दशा हुई तो परस्त्री भोगी के लिए क्या कहना चाहिए और उसके लिए क्या लिखा जाना चाहिए, इसका इन्साफ करना मैं वाचकों पर छोड़ देता हूं सच्चा न्याय तोल कर जजमेंट (फैसला) देना।

बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी ने महाराणा भीमसेन की भार्या पद्मनी में आसक्त होकर उसको प्राप्त करने के लिए कितना भारी युद्ध किया, यह चितोडगढ के इतिहास से मालूम होता है, एक वक्त तो पद्मनी बादशाह को चकमा देकर अपने पति को छुडा लाई और बाद जब अपनी रक्षा का कोई उपाय नहीं देखा तब उसने

प्राण विसर्जन कर दिये, कहने की गरज यह है कि पर स्त्री के पिपासु बादशाह ने कितना अनर्थ किया।

गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या में आसक्त इन्द्र को ऋषि के शाप से सहस्र भगी (हजार भग योनी वाला) होना पड़ा—धात की खण्ड के भरत में रहने वाला पद्मनाभ राजा ने नारद के मुख से सुनी हुई पाण्डवों की स्त्री द्रुपदी में आसक्त होकर देव द्वारा उसका अप हरण कराया, इससे श्री कृष्ण ने उसकी भारी दुर्दशा की, सति द्रुपदी सुरक्षित रही और राजा व्यर्थ कलङ्क से कलंकित हुवा—गुरु स्त्री के सग से चन्द्रमा कलङ्कित होकर क्षय दशा को प्राप्त हुवा। कहा गया है—

मूढः परस्त्रियमुपेत्य कुवाक्यवध—
दण्डापकीर्तिमृति दुर्गति दुःखपात्रम् ॥
स्याद् ब्रह्मराजयुवनिरतिदोर्ष पाप—
लक्ष्मक्षयाविव विधोर्गुरुतल्पगस्य ॥ १ ॥

भावार्थ—मूर्ख पुरुष पर स्त्री को प्राप्त करके दुर्वचन-बंधन दण्ड प्रहार-अपकीर्ति मरण और दुर्गत्यादि दुःख,

का भाजन बनता है, गुरुपत्नी के संग से चन्द्रमा कलंकित होकर क्षय का प्राप्त हुआ। गौतम ऋषि भी पत्नी अहल्या पर आसक्त होकर ऋषि के शाप के इन्द्र कारण सहस्र भग वाला हो गया।

श्रीपाल कुमार की स्त्रिया में आसक्त बन कर पापी धवल ने कुमार को समुद्र में डाला, उनको मारने और मराने के अनेक उपाय किये, पर आखिर अपनी कटारा से स्वय मर कर सातवीं नरक में गया और जगत में भारी निन्दित हुवा।

पर स्त्री का भोगी सदा चिन्तित रहता है, इससे उसका शरीर दिन प्रति दिन सूखता जाता हैं। सच है! चिन्ता को डाकिन और चिता की उपमा दी गई है—

चि ता डाकिन मन बसी, चुट चुट लोही खाय ॥
रति प्ररति कर सचरे, तोला तोला जाया ॥ १ ॥
चिन्ता चिता का एक रस, इसमें अन्तर येह ॥
चिता जलावे मृतक जन, चिंता जीवित देह ॥२॥

पर स्त्री का समागी इतनी अधाधुधी चलाता है कि व्रत नियम एवं तपस्या का सहज ही खण्डन कर देता

है, उसके दारुण फल की जरा भी चिन्ता नहीं करता वह सब के आँख में धूल डाल कर काम करना चाहता है, सब अन्धे हैं, कोई कुछ नहीं देखता और न जानता है,इस प्रकार झोंकी की तरह काम किया करता है,आखिर पोल के ढोल जब बजने लगते हैं, तब घबड़ाता है और डूबतो तिनका पकड़ने कि तरह अपना बचाव करता है और दूसरे पर दोष मढ़ने का भरसक प्रयत्न करता है, पर अन्त में कुदरत उसको फटका मारती है, जिससे वह नालायक सिद्ध होकर ठंडा पड़ जाता है।

कामदेव को नमस्कार है, कहाँ तक कहा जाय राजुल जैसी महासती को देख कर रथनेमि चलचित हो गये और केली क्रीडा की याचना की, महासती ने उपदेश का इन्जकशन (पिचकारी) लगाकर शान्त किये।

अब तक तो हमने पर स्त्री गमन पर ही व्याख्या की, पर अब पर पुरुष सेवी स्त्रियों के जीवन पर जरा दृष्टिपात करते हैं—

आपको मालूम तो होगा ही कि भर्तृहरि ने फकीरी

रानी पिंगला थी। अपनी रानी पिंगला के व्यभिचार से उसका घर त्याग धारण किया, इसीलिए इस तरह कहा कि किसी ने महाराजा भर्तृहरि को अमर फल भेंट किया उसने अत्यन्त प्रेम से अपनी प्राणप्यारी पिंगला को दे दिया उसने प्रेमवश अपने जार पुरुष को दिया, उसने अपनी अति प्रेमपात्री वेश्या को दे दिया, उसने राजा भर्तृहरी की नजर कर दिया, इस पर राजा साहब हक्काबक्की (मूर्च्छा) सी, अमर फल का सारा रहस्य खुल गया महाराज के उस समय के ये उद्गार हैं—

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता ।
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः ॥
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या ।
धिक् ताञ्च तञ्च मदनञ्च इमाञ्च माञ्च ॥१॥

भावार्थ—जिसको (पिंगला स्त्री को) मैं निरन्तर चिन्ता करता हूँ (अहर्निश प्रेम पूर्वक चाहता हूँ) वह मेरे से विरक्त है (मुझे नहीं चाहती) वह अन्य पुरुष को इच्छती है, और वह अन्य में (स्त्री में) आसक्त है, तथा वह अन्य स्त्री मेरे लिए तुष्ट है यानी मुझे चाहती

हैं, इसलिए धिक्कार हो उस रानी को, उस पुरुष को, कामदेव को उस स्त्री को, और मुझको।

जिसके वशवर्ती होकर जनता अपने जीवन को इस प्रकार विडम्बित करती है, बस यह कहते हुए राज्य विलास छोड़ कर योगी बन गए।

इसही तरह सुदर्शन सेठ पर आसक्त होकर कपिला और अभया रानी ने बड़ा हैरान किया आखिर शूली तक का मौका आगया, पर सुदर्शन सेठ निश्चल रहा।

राजा, महाराजा, सम्राट्, सेठ, साहूकार और अन्य बड़े बड़े घर की बहुतसी औरतें व्यभिचारणी होती हैं, ऐसा सुना जाता है-कोइ प्रधान—कर्मचारी से तो कोइ मुनीम गुमास्तों से तो कोइ डाक्टर-वैद्यों से तो कोइ नौकर चाकर से तो कोइ दासियों के मार्फत अन्य जार पुरुषों से लगी रहती हैं, घर का धन खिला कर—लुटा कर शील का दिवाला निकालती हैं, जो बराबरी के या बड़े आदमियों से फँस जाय तो मूल्य लेकर शील का निलाम बोल देती हैं।

छोटी कौम की और निर्धन स्त्रियाँ तो इस चीक काम करती मात होती हैं, वे तो अन्न-वस्त्र में ही हर तरह तैयार हो जाती हैं कई परिव्राजिकाएँ, योगिनियाँ, मायवर्णियाँ और भिक्षुकाएँ अपनी वासना तृप्त करने के लिए बड़े बड़े त्यागियों का दिल हिला देती है और अपना काम बना लेती है ऐसा सुना जाता है यदि सत्य हो तो हद हो गई, ससार के लिए यह एक धोखे की टट्टी साबित होगी, साधु के वेश में शयतान की मिसाल चरितार्थ होगी। बस अधम स्त्री के लिए इतना ही काफी है; इससे उलटा (पुरुष पन में)समझ लेना।

यहाँ तक क़िस्सा सुना गया है कि पर स्त्री गमन करने वाला मोतेली माता, काकी, मामि, भुआ माँसी, की लड़की बहन और बहन, ये स्थान पर बहन, भोजाई, साली इत्यादि रिस्तेदार औरतें को फँसाकर वह नीच पुरुष अपनी काम पिपासा पूरी करता है, इससे जगत् में मुँह दिखाने लायक नहीं रहता।

जगत में व्यभिचार के एजन्ट (दलाल) भी मौजूद है, पुरुष और स्त्रियाँ जाहिर या खानगी तौर पर दलाली

करते मालूम होते हैं, फिर चाहे वे राग से करें या लोभ से करें, मगर करते जरुर हैं ऐसे दुराचार के दलाल व्यभिचारी तो प्रायः होते ही हैं, पर भारी पाप का उपार्जन कर पापियों की गिनती में शुमार होते हैं।

कितना विषम जमाना है, पुरुष स्त्रियों की कैसी वृत्तियां हैं, किस कदर ढोंग रच कर और लोगों को धोखा देकर अपना काम बनाया जाता है, यह समझदारों से और सतर्क मनुष्यों से अब छिपी नहीं है, ऐसे दुराचारी धर्म कर्म मर्म और शर्म सब खो बैठते हैं, कितना जुल्म! कितना धोखा!! कितना अनाचार!!! परमात्मा रक्षा करे।

उपरोक्त, बयान से आपको पता चल गया होगा कि इस व्यसन के सेवी की क्या दुर्दशा होती है, सभ्य संसार की दृष्टि से कितना नीचे गिर जाता है, ब्रह्मचर्य को खोकर अपनी शारिरीक, मानसिक और आत्मिक तमाम शक्तियाँ नष्ट कर देता है, इसलिए वाँचकों से निवेदन है कि आप छोटे या बड़े किसी भी रूप में इस व्यसन को सेवन करते हों तो शीघ्रातिशीघ्र त्याग कर अपना श्रेय करें।

❀ उपसंहार ❀

उपरोक्त सातों व्यसनों की व्याख्या पढ़ने से आपको ज्ञात होगया होगा कि इनके सेवन से मानव धर्म का किस कदर ह्रास होता है—जूआ से धन का नाश, इज्जत आबरू का नाश और मानसिक बल का नाश हो जाता है, इससे सातों व्यसनों का सगी बन जाता है,-मांसा हारी क्रूर प्रकृति का बनकर अनर्थ करता है, अनेक रोगों का घर बन जाता है, इससे यश और बुद्धि कमज़ोर हो जाती हैं-हराम खोर पागल सा बन जाता है, सभ्यता और शिष्टाचार तो मानो हवा खा जाते हैं, रक्त मांस और हड्डियाँ कमज़ोर हो जाती हैं; तथा दिल और दिमाग बेकार हो जाते हैं-वेश्या गमन तो व्याधियों की खान है, वीर्य नाश होकर सारा शरीर बेकार बन जाता है, इससे लज्जा और मर्यादा विनाश हो जाती है, जगह जगह अनादर होता है-शिकारी तो निरअपराधी जीवों को मार कर स्वर्ग और मोक्ष का मानो बहिष्कार (Boycott) करता है, ऐसे लोग हत्यारों की गिनती

में गिने जाते हैं,-हत्यारों का मुंह देखना भी पाप समझा जाता है, उसका सवेरे मुह देखने में आजाय तो रोटी नहीं मिलती, ऐसी समाज की मान्यता है—चोरी करने से जेल में जाना होता है, वहां कड़े नियंत्रण में रह कर कड़ी मजूरी करनी पड़ती है, कोइ अपने घर में नहीं आने देता, हिंसा—व्यभिचारादि दुष्ट कर्म इससे उत्पन्न होते हैं—पर स्त्री गमन तो प्रत्यक्ष लोकद्वय विरुद्ध हैं इस के सगी का तन, मन, धन, का नाश तो होता ही है, पर स्थान स्थान पर उसको अपमानपूर्ण फिटकार दिया जाता है, इसके अनेकानेक शत्रु हो जाते हैं, चौदहवें रत्न का प्रयोग (मार पीट) तो होता ही है, पर यावत् मृत्यु तक नोबत गुजरती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि सातों व्यसनों का सेवन गृहस्थ नीति समाज नीति-राजनीति और धर्म नीति से विरुद्ध है इससे धर्म कर्म सब नाश होते हैं, मनुष्य मानव जीवन हार जाता है, इसलिए आपसे विज्ञप्ति हैं कि अपने हित के लिए, सदाचार और सद-

विचार के खातिर, जीवन की उन्नति और विकास के हेतु इन व्यसनों का सर्वथा त्याग कर अपना भला कर लेना चाहिये; यह मानव भव बारम्बार नहीं मिलेगा, इसलिये सचेत होजाइये। समय भागा जारहा है, बिजली के झपकारे मोती पिरोना हो तो पिरो लिजिये, इन व्यसनों में से एक भी व्यसन यदि आपको छूता हो तो उसको जलाञ्जली देकर प्रतिज्ञाबद्ध हो जाईये, इसमें आपका महान् हित है और परम कल्याण है।



: उपदेश :

महानुभावो ! यदि दुनिया में रह कर आपको अपनी उन्नति करना है, उन्नत जीवी बनना है, योग्यता प्राप्त करना है, सेवा भावी बनना है, कल्याण मार्ग को शोधना और मानव जीवन को सफल करना है तो इस ग्रन्थ में वर्णित सातों व्यसनों का त्याग करिये।

मानव भव पुनः पुनः नहीं मिल सकता, आयुष का पता नहीं कब खत्म हो जायगा, अपनी और अन्य की कुछ भलाई करना हो तो करलें, इस रत्नचिन्तामणि मनुष्य भव को कंकर की तरह मत गुमाईये, क्यों नाहक कलंकों से कलंकित होकर जीवन बरबाद करते हैं। धन दौलत, कुटुम्ब परिवार और ऐश आराम की सामग्रियाँ यहीं पर रह जाती हैं, जन्में थे तब बंदी मुट्ठी की तरह बहुमूल्य थे, पर मरने पर मुट्ठी खुल गई और कीमत प्रकट होगई। छजलाणी गोत्र के संस्थापक (अस्मद्-गोत्रीय संस्थापक) वैराग्यवान् छजु कुमारजी कहते हैं—

नन्दन की नव रही बीसल की वीस रही।
रावण की सब रही, पीछे पछताओगे॥
इतते न लाए हाथ, इतते न चले साथ।
इतही की जोरी तेहो, इतही गुमाओगे॥१॥
हेम, चीर, घोड़ा, हाथी काहुके न चले साथी।
बाट के बटाऊ जैसे कल ही उठ जाओगे।
कहत है छजु कुमार, सुन लो माया के यार।
बधी मुट्ठी आए थे, पसार हाथ जाओगे॥२॥

कितना बढ़िया कवित्त कहा गया है, इस पर मनन करिये, और व्यसनों से मुक्त होईये-आपको एक नूतन अदभुत बात सुनाकर यह ग्रन्थ पूरा कर दिया जाता है-

❀ निष्पाप नगर ❀

ससार में ऐसा कोई देश, प्रान्त, नगर, शहर या गाव न होगा कि जिसमें व्यसनों का साम्राज्य न हो, परन्तु यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि मैं एक ऐसे निष्पाप नगर का आख्यान सुनाता हूँ कि जो व्यसनों से सर्वथा मुक्त है।

एक भटकता हुआ मुसाफिर ईडाहो (अमेरिका) के प्रीस्टन नाम के एक नगर में पहुँच गया, मुसाफिर खूब प्यासा था, सिगारेटों की तलब भी सख्त हो गई थी—एक दुकान के पास जाकर मुसाफिर ने पूछा—यहाँ सिगारेट मिलेगा? दुकान के पास एक बाई बैठी थी, उसने कहा—यहाँ सारे गाँव में तुमको सिगरेट नहीं मिलेगा, कारण की यहाँ उसका प्रचार ही नहीं है।

मुसाफिर ने पुनः पूछा—थोड़ा शराब तो मिल सकेगा? बाई ने कहा—शराब तो ठीक पर चाय-काफी भी यहाँ नहीं मिल सकती, हम तमाम शुद्ध वनस्पति आहारी हैं और व्यसन की चीज़ बनाने बेचने की और काम में लाने की यहाँ सख्त मनाई है।

लेखक का कहना है कि करीब ६०००० साठ हज़ार आदमी इस नगर में बसते हैं, तमाम जन मानों व्रतधारी समान जिन्दगी बिताते हों, ऐसा मालूम होता है। यहाँ न तो परमात्मा के मन्दिर हैं न धर्म प्रचारक ही हैं, तथापि स्वेच्छा से इतना [illegible] और अपना सादा जीवन गुजारते हैं।

भी कैसे सकती हैं ? एकन्दर शहर बड़ा सुखी और शान्ति प्रधान है—वैभवविलास की प्रचुर सामग्री के मध्य में एक ऐसा व्यसन और विलास मुक्त नगर हो, यह आज के युग में भारी आश्चर्य स्मारक है।

(फ्री प्रेस जर्नल ता० १६-२ ४१ से उद्धृत)

मुमुक्षो ! आपके हित के लिए काफी लिख कर हमने अपना कर्तव्य पालन कर दिया है, अब आप इस पर खूब मनन कर अपने श्रेय के लिये इन व्यसनों का त्याग कर अपना फर्ज अदा करें।

ॐ शान्तिः

मु० जोधपुर-मारवाड़
आषाढ़ शु० ५ रविवार
वि स० १९९८ सन् १९४१

Veerputra
Anand Sagar

इस नगर की स्थापना हुवे करीब ५० पचास वर्ष हुवे हैं, इसमें पिछले ४८ चयालीस वर्षों में चोरी का मात्र एक केस बना है जिससे सारा शहर गमगिनी में डूब गया था, सतर्क तलास करने से पता चला कि वह चोर पागल था, इस ही से यह बनाव बना, यहाँ करीब करीब चोरी होती ही नहीं है और इसही लिए पुलिस या अदालत की दरकार नहीं रहती।

पिछले महायुद्ध में दो शराबी यहाँ नजर आये थे, पर वे तो लश्करी आदमी थे, अपने देश में जाते हुवे इस नगर की सरहद में होकर गुजरे थे. नगर पालक ने ऐसी अनेक आश्चर्य जनक बातें उस प्रवासी को सुनाई– नगरवासी शराब बीड़ी को छूते नहीं हैं, इतना ही नहीं, किन्तु मस्तक में डालने का सुगंधी तेल–पाउडर और अन्य श्रृंगारिक चीजों को भी नहीं छूते हैं। यहाँ नाटक सीनेमा तो कोई जानता ही नहीं है।

जहाँ इतनी सादाई से लोग अपना जीवन बसर करते हों, वहाँ जुआँ और नशा बाजी आदि व्यसन तो रह

भी कैसे सकती है ? एकन्दर शहर बड़ा सुखी और शान्ति प्रधान है—वैभवविलास की प्रचुर सामग्री के मध्य में एक ऐसा व्यसन और विलास मुक्त नगर हो, यह आज के युग में भारी आश्चर्य स्मारक है।

(फ्री प्रेस जर्नल ता० १६-२-४१ से उद्धृत)

मुमुक्षो ? आपके हित के लिए काफी लिख कर हमने अपना कर्तव्य पालन कर दिया है, अब आप इस पर खूब मनन कर अपने श्रेय के लिये इन व्यसनों का त्याग कर अपना फर्ज अदा करें।

ॐ शान्तिः

मु० जोधपुर-मारवाड़
आषाढ़ शु० ५ रविवार
वि सं० १९९८ सन् १९४१

Veerputra
Anand Sagar



❀ प्रवचन ❀

United we rise and Divided we fall

संगठन में हमारा उत्थान है और विभाग में हमारा पतन है।

When wealth is lost nothing is lost
When health is lost something is lost,
But when character is lost allthing is lost

जब द्रव्यनाश हो गया तो कुछ भी नाश नहीं हुवा,
जब स्वास्थ्य नाश हो गया तो कुछ वस्तु नाश हो गई;
परन्तु जब चरित्र नाश हो गया तो सब कुछ नाश होगया.

The Kingdom is not made for the King
but the King for the Kingdom

राज्य राजा के लिए नहीं बनाया गया,
किन्तु राजा राज्य के लिये बनाया गया है।